॥ ॐनमः ॥

॥ मेरी सुरति अन्तरमें लागी रे, मे तो हुओ बडभागी रे ॥ मे० ॥ ए टेर ॥

दुनियादारि दुर करीने, मै तो हुओ अन्तर वैरागी रे ॥ मे० ॥ १ ॥

नरनारी नपुंसकवेदी, नही तात मात सुत त्यागी के वैरागी रे ॥ मे० ॥ २ ॥

पर परिणती दुर करीने, मै तो स्वमत थयो रागी रे ॥ मे० ॥ ३ ॥

अलख निरजन अजरअमर हु, शुद्ध चेतनता घट जागी रे ॥ मे० ॥ ४ ॥

चिद्घन चेतन स्वप्रकाशित, मै तो आनन्दमय बडभागी रे ॥ मे० । ५ ॥

सुखम सरोवर नायके बैठो, जलहल ज्योति तिहा जागी रे ॥ मे० ॥ ६ ॥

बाजमें दु:ख अन्तरमें सुख, तिहा तो अनहद मुरली बाजी रे ॥ मे० ॥ ७ ॥

रति अरति दुर करीने, आनन्दघन प्रभु हुवा शिवरागी रे ॥ मे० ॥ ८ ॥

सेवक जीतनी येही अरज है, परपरिणतिसे उगारो शिवगामी रे ॥ मे० ॥ ९ ॥

॥ इति शुभम ॥

आतम अनुभवे आतमा, लहे मुक्ति आवास ॥
परमां बुद्धि निहालता, होये पुद्गलना दास ॥ २० ॥
परभावे रमता थका, लहे न शुद्ध स्वरूप ॥
भेदज्ञान दृष्टी थकी, कोइक लहे स्वरूप ॥ २१ ॥
आधि व्याधि मिट गइ, मिट गइ इच्छा आश ॥
शत्रु मित्र एक भाव है, खेले अनुभव पास ॥ २२ ॥
आतम अनुभव ज्ञानसें, टले मतिभ्रम दोष ॥
अनुभव विन जाने नहीं, बहिरातम मतिदोष ॥ २३ ॥
ज्ञानदर्शन चारित्र है, रत्नत्रयि पद सार ॥
चिद्घन आतम स्वरूप है, गुरुगम लहे निरधार ॥ २४ ॥
अनुभव पचिशी कही, भव्य जीव हितकार ॥
आनन्दघन गुरु कृपा थकी, जीतलहे भवपार ॥ २५ ॥

इति कल्याणमस्तु

विपय विकल्प वासते, लहे न अनुभव ज्ञान ॥
निर्विकल्प अनुभव लहे, प्रगटे आतम नाण ॥ १३ ॥

ज्ञानी आत्म अनुभव लहे, राग द्वेप करी नास ॥
अल्प भवे भवि ते लहे, अविचल पुरको वास॥ १४ ॥

आत्म द्रव्य अनुभव विना, लहे न सुखकी खान ॥
आतम अनुभव ज्ञानसे, लहे मोक्षको स्थान ॥ १५ ॥

पढे ग्रंथ अनुभव विना, कटे न मोहकी जाल ॥
आत्म अनुभव ज्ञानसें, नासे वह तत्काल ॥ १६ ॥

ग्रहण योग्य है आतमा, त्याग योग्य है कर्म ॥
ज्ञान ध्यान सयोगसें, प्रगटे आतम धर्म ॥ १७ ॥

शुद्ध अनुभव ज्ञानसे, लहे भविक जन मुक्ति ॥
परभावे संसार है, येहीज साची युक्ति ॥ १८ ॥

अनुयोग चारमा सार है, द्रवाणु कहे जिननाम ॥
श्री सद्गुरुकी कृपासें, समझे आतमराम ॥ १९ ॥

त्रिलिंगमे धर्म नही, जो माने सो मूढ ॥
वस्तु स्वभावे धर्म हे, यह परमारथ गूढ ॥ ६ ॥

धर्म अरूपी आतमा, जाने ध्यानी राय ॥
अनुभव स्वाद ते लहे, अल्प भवे शीव जाय ॥ ७ ॥

आतम स्वरूप समझे नही, समझे नही नयवाद ॥
क्रिया काडमे पचमरे, लहे न आतम स्वाद ॥ ८ ॥

भोले जन समझे नही, आतम धर्म स्वरूप ॥
आतम अनुभव ज्ञान विन, डुबे भवजल कूप ॥ ९ ॥

यश कीर्ति रच्छे घणी, चेला पुस्तक माल ॥
तस किरिया वृथा कही, बोले उपदेश माल ॥ १० ॥

आतम धर्म अगम्य हे, जाने नहीं नह लेश ॥
जप तप क्रिया काडसे, छूटे नहीं क्लेश ॥ ११ ॥

आतम ध्याने मुनिरायने, मनकपि वा यो लाय ॥
सोऽहं तार लगायके, लिया शिवपद जाय ॥ १२ ॥

# ॥ अथ अनुभव पञ्चविंशाति लिख्यते ॥

प्रणमी भगवति भारति, प्रणमी जिनजगबंधु ॥
आतम अनुभव कारणे, रचु पञ्चविंशी प्रबंध ॥ १ ॥
यह शत्रु यह मित्र है, यहः मुझ परिवार ॥
जबलग बुद्धि एहवी, तबलग है ससार ॥ २ ॥
पर सगे रगी सदा, अनुभव लहे न कोय ॥
अनुभव आतम कारणे, बहिरातम पद खोय ॥ ३ ॥
उच नीच अज्ञानसें, जबतक जाने तेह ॥
तबलग है ससारमे, लहै न भवनो छेह ॥ ४ ॥
उंच नीच आतम नही, अज्ञान भरमको दोप ॥
उंच नीच समझे नही, कैसे लहे सुख पोप ॥ ५ ॥

निर्लिंगमे धर्म नही, जो माने सो मूढ ॥
वस्तु स्वभावे धर्म है, यह परमारथ गूढ ॥ ६ ॥

धर्म अरुपी आतमा, जाने ध्यानी राय ॥
अनुभव स्वाद ते लहे, अल्प भवे शीव जाय ॥ ७ ॥

आतम स्वरूप समझे नही, समझे नही नयवाद ॥
क्रिया काडमे पचमरे, लहे न आतम स्वाद ॥ ८ ॥

भोले जन समझे नही, आतम धर्म स्वरूप ॥
आतम अनुभव ज्ञान विन, डूबे भवजल कूप ॥ ९ ॥

यश कीर्ति वच्छे घणी, चेला पुस्तक माल ॥
तस क्रिरिया वृथा कही, घोले उपदेश माल ॥ १० ॥

आतम धर्म अगम्य है, जानें नहा वह लेश ॥
जप तप क्रिया काडसे, छूटे नही क्लेश ॥ ११ ॥

आत्म ध्याने मुनिरायने, मनकपि वा यो लाय ॥
सोऽहं तार लगायके, लिया शिवपद जाय ॥ १२ ॥

# ॥ अथ अनुभव पञ्चविंशति लिख्यते ॥

मणमी भगवति भारति, मणमी जिनजगबधु ॥
आत्म अनुभव कारणे, रचु पञ्चविंशी मबध ॥ १ ॥
यह शत्रु यह मित्र है, यह मुझ परिवार ॥
जबलग बुद्धि एहवी, तबलग है ससार ॥ २ ॥
पर सगे रंगी सदा, अनुभव लहे न कोय ॥
अनुभव आतम कारणे, बहिरातम पद खोय ॥ ३ ॥
उच नीच अज्ञानसें, जबतक जाने तेह ॥
तबलग हे संसारमे, लहै न भवनो छेह ॥ ४ ॥
उंच नीच आतम नही, अज्ञान भरमको दोप ॥
उंच नीच समझे नही, कैसे लहे सुख पोष ॥ ५ ॥

रयसुलह ) मन वच और काया यह तीन दडकका विरामसे सुर्लभ एसो (लहुममदिंतुमुरकपय) मोक्ष पद जल्दी देदो ॥ ४१ ॥

॥ सिरिजिणहंसमुणीसर, रज्जेसिरिधवलचदसीसेण
गजसारेणलिहिया, एसाविन्नत्तीअप्पहिया ॥ ४२ ॥

॥ ( सिरिजिणहसमुणीसर ) श्री जिनहसमुनिके ( रज्जेसिरिधवलचदसी-सेण ) राज्यके समय श्री धवलचद्रमुनीके शिष्य ( गजसारेणलिहिया ) गजसार मुनिने लिखा है ( एसाविन्नत्तीअप्पहिया ) यह विज्ञप्ति अपनी आत्माके अर्थे ॥ ४२ ॥

॥ इति श्रीमन्महायोगीन्द्र आनदघन महाराज चरणोपासक जित विरचित हिन्दी अनुवाद सहित दडक प्रकरण समाप्तम् ॥

---

णनिरयवतरिया ) वैमानिक भुवनपति नारक और व्यंतर ( जोइसचउपणतिरिया ) ज्योतिषि चौरिन्द्रि और पचेन्द्रि तिर्यच ( बेइदितिइदिभूआउ ) तथा दोइन्द्रि तेइन्द्रि पृथ्वीकाय और अप्काय ॥ ३९ ॥

॥ वाऊवणस्सइंचिय, अहियाअहियाकमेणमेहुति
सव्वेविइमेभावा, जिणामएणतसोपत्ता ॥ ४० ॥

॥ ( वाऊवणस्सईचिय ) वाउकाय और वनस्पतिकाय यह सब निश्चय करके (अहियाअहियाकमेणमेहुति) अनुक्रमे एक एकसे अधिक होते है ( सव्वेविइमेभावा ) यह सबही भी भावो ( जिणामएणतसोपत्ता ) हे जिनेश्वर देव मैंने अनती वेर प्राप्त किया है ॥४०॥

॥ सपइतुह्मभत्तस्स, दंडगपयभमणभग्गहिययस्स
दंडतियविरयसुलह, लहुममदिंतुमुक्खपय ॥ ४१ ॥

॥ ( सयइतुह्मभत्तस्सदंडगपयभमणभग्गहिययस्स ) अत्र चौवीश दंडकोंके स्थानकके विषे भमनेसे निवृत्त हुवा है मन जिसका एसा तुमारा भक्त एसा मुझको ( दंडतियवि-

सब दडकोके विषे होता है ( सव्वत्थजंतिमणुआ ) और मनुष्योकाभी जाना सब दडको के विषे होता है ( तेउवाऊहिंनोजंति ) परंतु तेउकाय और वाउकायके विषे नही जाने ॥ ३७ ॥

**॥ वेयतियतिरिनरेसु, इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु**
**थिरविगलनारएसु, नपुसवेओहवइएगो ॥ ३८ ॥**

॥ ( **वेयतियतिरिनरेसु** ) तीन वेद तिर्यंच और मनुष्यको होते है ( **इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु** ) और चार प्रकारके देवोके विषे स्त्री वेद तथा पुरुष वेद होते है ( **थिरविगलनारएसु** ) और पाच स्थावर विकलेंद्रि और नारकके विषे ( **नपुसवेओहवइएगो** ) एक नपुसक वेदही होते है ॥ ३८ ॥

**॥ पज्जमणुबायरग्गी, वेमाणियभवणनिरयवंतरिया**
**जोइसचउपणतिरिया, वेइंदितिइंदिभूआउ ॥ ३९ ॥**

॥ अब अल्प बहुत्व द्वार कहते है ॥

॥ ( **पज्जमणुबायरग्गी** ) पर्याप्ता मनुष्य और बादर अग्निकाय ( **वेमाणियभव-**

॥ ( पुढवाइदसपएसु ) पृथ्वीकायादि दश पदके विषे ( पुढवीआउवणस्सई-जंति ) पृथ्वीकाय अपूकाय और वनस्पतिकायक जीवो सब होते है ( पुढवाइदसपएहिय ) और पृथ्वी कायादि दश पदमेंसे निकले हुये जीवों ( तेउवाउसुउववाओ ) तेउकाय और वाउकायक विषे उत्पन्न होते है ॥ ३५ ॥

॥ तेउवाउगमण, पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे
पुढवाइठाणदसगं, विगलाइतियतहिजंति ॥ ३६ ॥

॥ (तेउवाउगमण) तेउकाय और वाउकायकाजाना (पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे) पृथ्वीकायादि नवपदक विष होते है ( पुढवाइठाणदसग ) पृथ्वीकायादि दश स्थानकके जीवों ( विगलाइतियतहिजंति ) तीन विकलेन्द्रिय उत्पन्न होते हे ॥ ३६ ॥

॥ गमणागमणगब्भय, तिरिआणसयलजीवठाणेसु
सव्वत्थजंतिमणुआ, तेउवाहुहिनोजंति ॥ ३७ ॥

॥ (गमणागमणगब्भयतिरिआणसयलजीवठाणेसु) गर्भजतिर्यंचका जाना आना

सब दडकोके विषे होता है ( सबत्थजंतिमणुआ ) और मनुष्योकाभी जाना सब दडको के विषे होता है ( तेउवाहुहिंनोजति ) परतु तेउकाय और वाउकायके विषे नही जाते ॥ ३७ ॥

॥ वेयत्तियतिरिनरेसु, इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु
थिरविगलनारएसु, नपुसवेओहवइएगो ॥ ३८ ॥

॥ ( वेयतियतिरिनरेसु ) तीन वेद तिर्यच और मनुष्यको होते हे ( इत्थीपुरिसोयचउविहसुरेसु ) और चार प्रकारके दवोके विषे स्त्री वद तथा पुरुष वद होते हे ( थिरविगलनारएसु ) और पाच स्थावर विकलेन्द्रि और नारकके विषे ( नपुसवेओहवइएगो ) एक नपुसक वदही होते हे ॥ ३८ ॥

॥ पज्जमणुवायरग्गी, वेमाणियभवणनिरयवतरिया
जोइसचउपणतिरिया, वेइदितिइदिभूआउ ॥ ३९ ॥

॥ अब अल्प बहुत्व द्वार कहते हे ॥

॥ ( पज्जमणुवायरग्गी ) पर्याप्त मनुष्य और बादर अग्निकाय ( वेमाणियभव-

॥ ( पुढवाइदसपएसु ) पृथ्वीकायादि दश पदके विषे ( पुढवीआउवणस्सई-जति ) पृथ्वीकाय अप्काय और वनस्पतिकायके जीवो सब होते है ( पुढवाइदसपएहिय ) और पृथ्वी कायादि दश पदमसे निकले हुये जीवो ( तेउवाउसुउववाओ ) तेउकाय और वाउकायक विषे उत्पन्न होते है ॥ ३५ ॥

॥ तेउवाउगमण, पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे
पुढवाइठाणदसग, विगलाइनियताहिजति ॥ ३६ ॥

॥ (तेउवाउगमण) तेउकाय और वाउकायकाजाना (पुढवीपमुहम्मिहोइपयनवगे) पृथ्वीकायादि नवपदके विषे होते हे ( पुढवाइठाणदसग ) पृथ्वीकायादि दश स्थानकके जीवों ( विगलाइतियतहिजति ) तीन विकलेन्द्रिम उत्पन्न होते हैं ॥ ३६ ॥

॥ गमणागमणगभ्भय, तिरिआणसयलजीवठाणेसु
सव्वत्थजतिमणुआ, तेउवाहुहिंनोजति ॥ ३७ ॥

॥ (गमणागमणगभ्भयतिरिआणसयलजीवठाणेसु) गर्भजतिर्यंचका जाना आना

**॥ पज्जत्तसखगप्भय तिरियनरानिरयसत्तगेजति**
**निरउवट्टाएएसु उववज्जतिनसेसेसु ॥ ३३ ॥**

॥ ( पज्जत्तसखगप्भय ) सख्याता वर्षके आयुवाले पर्याप्ति गर्भज ( तिरियनरा ) तिर्यंच और मनुष्य ( निरयसत्तगेजति ) यह दोनोही सातोही नारकके विषे जाते हे ( निरउवट्टा ) इस सातोही नारकसे निकले हुवे जीवो ( एएसु ) यह दो दडक बिन ( उववज्जतिनसेसेसु ) शेष दडकोक विषे उत्पन नही होते है ॥ ३३ ॥

**॥ पुढवीआउवणस्सइ मज्झेनारयविवज्जियाजीवा**
**सव्वेउववज्जति नियनियकम्माणुमाणेण ॥ ३४ ॥**

॥ ( पुढवीआउवणस्सइ ) पृथ्वीकाय अप्काय और वनस्पतिकाय ( मज्झे ) विषे ( नारयविवज्जियाजीवा ) नारकके जीवोंको वर्जके ( सव्वेउववज्जति ) और सर्व जीवो उत्पन्न होत है ( नियनियकम्माणुमाणेण ) अपने अपन कर्मानुसारे ॥ ३४ ॥ 

**॥ पुढवाइदसपएसु, पुढवीआउवणस्सईजति ॥**
**पुढवाइदसपएहिय, तेउवाउसुउववाओ ॥ ३५ ॥**

॥ (मणुआणदीहकालिय) मनुष्यको दीर्घकालकी सज्ञा होति है (दिठीवाओवए-सिआकेवि) कितनेक मनुष्यको दृष्टिवादोपदेशकी २१ सज्ञा भी होती है ॥ इति चोवीश दडके तिन प्रकारकी सज्ञाद्वार ॥

॥ अब गति आगति दो द्वार कहते हे ॥

( पज्झपणतिरिमणुअच्चिय ) पर्याप्ता पचेंद्रितिर्यंच और मनुष्य निश्चय करके ( चउविहदेवे-सुगच्छति ) चार प्रकारके देवोके विषे जाते हे ॥ २१ ॥

॥ सखाउपज्झपणिंदि तिरियनरेसुतहेवपज्झत्ते
भूदगपत्तेयवणे एएसुच्चियसुरागमण ॥ ३२ ॥

॥ ( सखाउपज्झपणिदि ) सख्यात आयुवाले पर्याप्तापचेंद्री ( तिरियनरेसु-तहेवपज्झत्ते ) तेसेही पर्याप्ता तिर्यंच और मनुष्यके विषे ( भूदगपत्तेयवणे ) पृथ्वीकाय अपकाय और प्रत्येक वनस्पतिकाय ( एएसुच्चिय ) इस पाचोके विषे निश्चय करके ( सुरा-गमणं ) देवताका आना इस लिये उत्पन्न होना ॥ ३२ ॥

॥ अब किमाहारद्वार कहते है ॥

**(छद्दिसिआहारहोइसवेसिं)** सब जीवोंके आशरे छेही दिशीका आहार जान लेना **(पणगाइप-एभयणा )** इतना विशषकि पृथ्वी कायादि पाचोही स्थावर पदके विषे भजना हे इस लिए छए दिशीका आहार होवे भी सही आर नही भी होव २० ॥ ईति चौवीश दडके छेदिशी आहारद्वार ॥ **( अहसन्नितियंभणिस्सामि )** अब तीन सन्नाद्वार कहता हु ॥ ॥ २९ ॥

**॥ चउविहसुरतिरिएसु निरएसुअदीहकालिगीसन्ना**
**विगलेहेउवएसा सन्नारहियाथिरासवे ॥ ३० ॥**

॥ **( चउविहसुरतिरिएसु )** चार प्रकारके देवोंके विषे तथा तिर्यच **( निरएसुअदीहकालिगीसन्ना )** और नारकके विषे दीर्घ कालकी सज्ञा होति है **( विगलेहेउवएसा )** और विकलेंद्रिके विषे हितोपदेशकीसज्ञा होति हे **( सन्नारहियाथिरासवे )** और स्थावरो सबही सज्ञा रहित होते है ॥ ३० ॥



**॥ मणुआणदीहकालिय दिट्ठीवाओवएसिआकेवि**
**पज्जपणतिरिमणुअच्चिय चउविहदेवेसुगच्छति ॥ ३१ ॥**

॥ वेमाणियजोइसिया पल्लतयठंसआउआहुंति
सुरनरतिरिनिरएसु छपज्जत्तीथावरेचउगं ॥ २८ ॥

॥ ( वेमाणियजोइसिया ) वैमानिक और ज्योतिषीका आयु जघन्यसें ( पल्लतयठसआउआहुति ) एक पल्योपमके आठमे भागे होते है १८ ॥ इति चौवीश दंडके उत्कृष्ट और जघन्यसें स्थितिद्वार कहा ॥

॥ अब पर्याप्तिद्वार कहते है ॥

( सुरनरतिरिनिरएसु ) देवता मनुष्य तिर्यच और नारकके विषे ( छपज्जत्ती ) छेही पर्याप्ति होति है ( थावरेचउग ) और पाच स्थावरके विषे प्रथमकी चार पर्याप्ति है ॥ २८ ॥

॥ विगलेपञ्चपज्जत्ती छद्दिसिआहारहोइसव्वेसि
पणगाइपएभयणा अहसन्नितियभणिस्सामि ॥ २९ ॥

॥ ( विगलेपंचपज्जत्ती ) तीनो विकलेंद्रिक विषे प्रथमकी पाच पर्याप्ति होति है १९ ॥ इति चौवीश दंडके पर्याप्तिद्वार ॥

**॥ असुराणअहियअयर देसूणदुपल्लयनवनिकाए**
**बारसवासुणपणदिण छम्मासउक्किट्ठविगलाऊ ॥ २६ ॥**

॥ (**असुराणअहियअयर**) असुरकुमारनिकायका आयु एक सागरोपसें कुछ अधिक होते है ( **देसूणदुपल्लयनवनिकाए** ) शेषनवनिकायका आयु दसेऊणा दो पल्योपमका होते है ( **बारसवासुणपणदिण** ) बारह वर्ष और गुण पचास दिन (**छम्मासउक्किट्ठविगलाऊ**) छे मासका उत्कृष्ट आयु अनुक्रमसें विकलेंद्रिका समज लेना ॥ २६ ॥

**॥ पुढवाइदसपयाण अंतमुहुत्तजहन्नआउठिई**
**दससहसवरिसठिइआ भवणाहिवनिरयवंतरिया ॥ २७ ॥**

॥ ( **पुढवाइदसपयाण** ) पृथ्वीकायादि दशपदकी इसलिये पांच स्थावर तीन विकलेंद्रि तिर्यंच और मनुष्यकी ( **अंतमुहुत्तजहन्नआउठिई** ) जघन्यसें आयुकी स्थिति अंतर्मूहुर्त्तकी कही है (**दससहसवरिसठिइआ**) दश हजार वर्षकी आयुस्थिति जघन्यसें ( **भवणाहिवनिरयवंतरिया** ) दश भुवनपति नारक और व्यंतरीककी कही है ॥ २७ ॥

जेसेही उत्पन्न होते है ( **तहेवचवणेवि** ) तेसेही चवते है ॥ इति चौवीश दडके उपपातद्वार तथा चवणद्वार

॥ अत्र ( स्थिति ) आयुद्वार कहते है ॥

( **बावीससगतिदसवाससहस्स** ) बावीस हजार सात हजार तिन हजार और दश हजार वर्षको आयु ( **उक्किट्ठपुढवाई** ) उत्कृष्टो अनुक्रमे पृथ्वीकायादि इस लिये पृथ्वीकाय अप्काय वाउकाय और वनस्पतिकायका जान लेना ॥ २४ ॥

**॥ तिदिणग्गितिपल्लाऊ नरतिरिसुरनिरयसागरतितीसा**

**वतरपल्लजोइस वरिसलक्खाहिअपलिअ ॥ २५ ॥**

॥ ( **तिदिणग्गि** ) तिन अहोरात्रिका आयु अग्निकायका ( **तिपल्लाऊ** ) तीन पल्योपका आयु ( **नरतिरि** ) मनुष्य और तिर्यंचका ( **सुरनिरयसागरतितीसा** ) देवता और नारकका उत्कृष्ट आयु तेतीस सागरोपमका होते है ( **वंतरपल्ल** ) व्यतरका आयु एक पल्योपमका ( **जोइस** ) और ज्योतिषी देवोका आयु ( **वरिसलक्खाहिअपलिअं** ) एकलाख वर्ष अधिक एक पल्योपमका होते है ॥ २६ ॥

द्रिको पाच (छक्क) छे (चउरिंदिसु) चौरेद्रिको (थावरेतियग) और स्थावरको तीन उपयोग होते है ॥ इति चोवीश दडके उपयोगद्वार १९ ॥ २१ ॥

॥ अथ उत्पति और चवनद्वार कहते है ॥

॥ संखमसखासमए गप्भयतिरिविगलनारयसुराय
मणुआनियमासखा वणऽणताथावरअसखा ॥ २३ ॥

॥ ( सखमसखासमए ) एक समयके विषे सख्याता और असख्याता ( गप्भयतिरि ) गर्भजतिर्यंच (विगलनारयसुराय) विकलेंद्रि नारक और देवता उत्पन्न होते हे ( मणुआनियमासखा) मनुष्योंनिश्चयकरके सख्याता उत्पन्न होत है (वणऽणता) वनस्पतिकाय अनंता ( थावरअसखा ) और स्थावर असख्याता उत्पन्न होते हे ॥ २३ ॥

॥ असन्निनरअसखा जहउववाएतहेवचवणेवि
बावीससगतिदसवास सहस्सउक्किठ्ठपुढवाई ॥ २४ ॥

॥ ( असन्निनरअसखा ) असन्नी मनुष्यो असख्याता उत्पन्न होते हे (जहउववाए)

॥ अब योगद्वार कहते है ॥

**॥ इक्कारससुरनिरए तिरिएसुतेरपनरमणुएसु**
**विगलेचउपणवाए जोगतियथावरेहोई ॥ २१ ॥**

॥ ( **इक्कारससुरनिरए** ) देवता और नारकको इग्यारे योग होते हे ( **तिरिएसुतेर** ) तिर्यंचको तेरह (**पनरमणुएसु**) और मनुष्यको पन्द्रेही योग होते हे (**विगलेचउ** ) विकल्द्रिको चार ( **पणवाए** ) वाउकायको पाच ( **जोगतियथावरेहोइ** ) और स्थावरको तीन योग होते है ॥ इति चोवीश दंडके योगद्वार १४ ॥ २१ ॥

॥ अब उपयोगद्वार कहत हे ॥

**॥ उवओगामणुएसु बारसनवनिरयतिरियदेवेसु**
**विगलदुगेपणछक्क चउरिंदिसुथावरेतियगं ॥ २२ ॥**

॥ (**उवओगामणुएसु**) मनुष्यके विषे उपयोग (**बारस**) बारहही होते है (**नवनिरयतिरियदेवेसु** ) नारक तिर्यंच और देवोंको नव उपयोग होते है (**विगलदुगेपण**) दो विकले-

॥ **(थावर)** पाच स्थावरको **(बितिसुअचरक्खु)** तथा दोइन्द्रि और तेइन्द्रिको एक अचखुदर्शनही होते है **( चउरिंदिसु )** चउरिंद्रिको **( तदुगसुए भणिय )** चक्षु तथा अचक्षु ऐसे दो दर्शन सूत्रमे कहा है **(मणुआचउदसणिणो)** और मनुष्यके विषे तो चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन अवधिदर्शन और केवल दर्शन ऐसे चारोहीहोत है **(सेसेसुतिगतिगभणिय)** बाकीके सब दंडकोके विषे केवल वर्जके तिनतिन दर्शन कहा है ॥ इति चोवीश दंडके ११–१२–१३ दर्शनद्वार ॥ १९ ॥

॥ अब ज्ञान अज्ञानद्वार कहते हे ॥

## ॥ अन्नाणनाणतियतिय सुरतिरिनिरएथिरेअनाणदुग
## नाणाअन्नाणदुविगले मणुएपणनाणतिअनाणा ॥ २० ॥

॥ **( अन्नाणनाणतियतिय )** तीन अज्ञान और तीन ज्ञान **( सुरतिरिनिरए )** देवताको तथा तिर्यच और नारकको होते हे **( थिरेअनाणदुग )** और स्थावरको मति तथा श्रुत ऐसे दो अज्ञान होत हे **(नाणाअन्नाणदुविगले)** दो ज्ञान तथा दो अज्ञान विकलेंद्रिको होत हे **( मणुएपणनाणतिअनाणा )** और मनुष्यको तो पाच ज्ञान और तीन अज्ञान एसे आठोही होते है ॥ इति चौवीश दंडके ज्ञान अज्ञानद्वार १३ ॥ २० ॥

**॥ पणगभ्पतिरिसुरेसु नारयवाऊसुचउरतियसेसे**
**विगलदुदिट्ठीथावर मिच्छत्तिसेसतियदिट्ठी ॥ १८ ॥**

॥ **(पणगप्भतिरिसुरेसु)** परन्तु गर्भज तिर्यंच और तेरह देवोको प्रथमकी पाच समुद्घात होति है **(नारयवाऊसु)** नारक और वाउकायके विषे प्रथमकी **(चउर)** चार समुद्घात है **(तिय-सेसे)** और शेषके सात दडकोके विषे प्रथमकी तीन समुद्घात होते है ॥ इति चोवीस दडके नवमा समुद्घात द्वार ॥

॥ १० अब दृष्टिद्वार कहते है ॥

**( विगलदुदिट्ठी )** विकलेन्द्रिको दो दृष्टि होती है एक सम्यक् और दुसरी मिथ्यादृष्टि ऐसे दो **( थावर )** पाच स्थावरको **( मिच्छत्ति )** एक मिथ्यादृष्टिही होति है **( सेसतियदिट्ठी )** शेष रहे हुये जो सोलह दडक उसके विषे सम्यक् मिश्र और मिथ्यात्व यह तीन दृष्टि होति है ॥ इति चौविश दडके दशमा दृष्टि द्वार ॥

॥ अब दर्शनद्वार कहते है ॥

**॥ थावरावितिसुअचरकु चउरिंदिसुतदुगसुएभणिय**
**मणुआचउदंसाणिणो सेसेसुतिगतिगभणिय ॥ १९ ॥**

॥ अब एक गाथसें सातोही समुद्घातका नाम देखलाते है ॥

**॥ वेयणकसायमरणे वेउवियतेयएयआहारे**
**केवलियसमुग्घाया सत्तइमेहुतिसन्नीण ॥ १६ ॥**

॥ ( **वेयण** ) वदना ( **कसाय** ) कषाय ( **मरणे** ) और मरण ( **वेउव्विय** ) वैक्रिय ( **तेयण्य** ) तेजस और ( **आहारे** ) आहारक ( **केवलियसमुग्घाय** ) केवली समुद्घात (**सत्तइमेहुतिसन्नीण**) इस प्रकारसें सातोही समुद्घात सन्नि-पचद्री मनुष्यको होति है ॥१६॥

**॥ एगिंदियाणकेवलि तेउआहारगविणाउचत्तारि**
**तेवेउव्वियवज्जा विगलासन्नीणतेचेव ॥ १७ ॥**

॥ ( **एगिंदियाणकेवलि** ) एकेन्द्रीको केवली ( **तेउआहारगविणाउचत्तारि** ) तथा तेजस और आहारक इस तिनुको वरजके बाकीको चार समुद्घात एकेद्रिको होति है (**तेवेउव्वि-यवज्जा** ) वह तिन और वैक्रिय यह चार वरजके ( **विगलासन्नीण** ) तीन समुद्घात विकलेद्रि ओर असन्नीको होति हे ( **तेचेव** ) निश्चे करके ॥ १७ ॥

॥ ( **सबेविचउकसाया** ) सर्व दंडकोके विषे चारोही कषाय होते है इति चोवीश दंडके छेठा कषायद्वार ॥

॥ अब सप्तम लेशाद्वार कहते है ॥

( **लेसछक्कगब्भतिरियमणुएसु** ) छेहीलेसा गर्भज तिर्यंच और मनुष्यकोहोते है ( **नारयतेऊवाऊ** ) और नारक तेउकाय वाउकाय ( **विगला** ) और तिनविकलेंद्रि एसे छे दंडकोके विषे प्रथमकी तीन लेस्या होति है ( **वेमाणियतिलेसा** ) और वेमाणिक देवोंको अन्तकी तीन लेस्या होति है ॥१४॥

## ॥ जोइसियतेउलेसा सेसासवेविहुतिचउलेसा इदियदारसुगम मणुआणंसत्तसमुग्घाया ॥ १५ ॥

॥ ( **जोइसियतेउलेसा** ) और ज्योतिषीको एक तेजोलेस्याही होति है ( **सेसासबेविहुंतिचउलेसा** ) और शेष सब दंडकोके विषे कृष्णादि चार लेस्या है इति चोवीस दंडके लेस्याद्वार ७ ( **इदियदारसुगम** ) और इन्द्रियद्वार तो सुगम है ८ ॥

॥ अब समुद्घातद्वार कहते है ॥ ९

( **मणुआणंसत्तसमुग्घाया** ) मनुष्यको सातोही समुद्घात होति है ॥ १५ ॥

(**सवेसुरायचउरसा**) सब देवोका समचोरस सस्थान है (**नरतिरियछसठाणा**) मनुष्य और तिर्यंचको छेही सस्थान होते है (**हुडाविगलिंदिनेरईया**) विकलेंद्रि और नारकको एक हुडक ही सस्थान होते है ॥ १२ ॥

**॥ नाणाविहधयसूई बुब्बुहवणवाउतेउअपकाया**
**पुढवीमसूरचदा–कारासठाणओभणिया ॥ १३ ॥**

॥ (**नाणाविह**) नाना प्रकारका (**धय**) ध्वजाके आकारे सस्थान (**सूई**) सुईके आकारे (**बुब्बुह**) जलके बुदबुदाके आकारे (**वणवाउतेउअपकाया**) अनुक्रमसें वनस्पतिकाय वाउकाय तेउकाय और अपकायका है (**पुढवीमसूरचदाकारा**) और पृथ्वीकायका मसूरकीदाल अथवा अर्धचन्द्रके आकारे (**सठाणओभणिया**) इस प्रकारसें चोवीश दडके पचम सस्थानद्वार कहा ॥ १३ ॥

॥ अब छठा कषायद्वार कहते है ॥

**॥ सवेविचउकसाया लेसछक्कंगब्भतिरियमणुएसु**
**नारयतेऊवाऊ विगलावेमाणियतिलेसा ॥ १४ ॥**

॥ थावरसुरनेरइया असघयणायविगलछेवट्ठा
सघयणछकगभ्भय नरतिरिएसुसुणेयव ॥ ११ ॥

॥ ( थावरसुरनेरइया ) पाच स्थावर तेरे देवता और एक नारक ऐसे सब मिलके उगणीसदडकोके विषे (असघयणाय) सघयण नही होते है (विगलछेवट्ठा) और तीन विकलेंद्रिको एक छेवठा होते है (सघयणछक्कगभ्भय) छे सघयण गर्भजको ( नरतिरिएसुविसुणेयवं ) मनुष्य और तिर्यचको जान लेना ॥ इति चौविस दडक सघयण द्वार ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अब चोथा सज्ञाद्वार कहते है ॥

॥ सवेसिंचउदहवा सन्नासवेसुरायचउरसा
नरतिरियछसठणा हुडाविगलिंदिनेरइया ॥ १२ ॥

॥ ( सवेसिचउदहवा ) सब दडकोके विषे चार दश तथा सोले ( सन्ना ) सज्ञा होते है ॥ इति चोवीश दडके चतुर्थ सज्ञाद्वार ॥

॥ अब पचमा सस्थानद्वार कहते है ॥

( **सवेसुरायचउरसा** ) सब देवोका समचोरस सस्थान हे ( **नरतिरियछसठाणा** ) मनुष्य और तिर्यंचको छेही सस्थान होते हे (**हुडाविगलिदिनेरईया**) विकलेंद्रि और नारकको एक हुडक ही सस्थान होते है ॥ १२ ॥

**॥ नाणाविहधयसूई बुब्बुहवणवाउतेउअपकाया**
**पुढवीमसूरचदा–कारासठाणओभणिया ॥ १३ ॥**

॥ ( **नाणाविह** ) नाना प्रकारका ( **धय** ) ध्वजाके आकारे सस्थान ( **सूई** ) सुईके आकारे ( **बुब्बुह** ) जलके बुद्बुदाके आकारे ( **वणवाउतेउअपकाया** ) अनुक्रमसें वनस्पतिकाय वाउकाय तेउकाय और अपकायका हे ( **पुढवीमसूरचदाकारा** ) और पृथ्वीकायका मसूरकीदाळ अथवा अर्धचन्द्रके आकारे ( **सठाणओभणिया** ) इस प्रकारसें चोवीश दडके पचम सस्थानद्वार कहा ॥ १३ ॥

॥ अब छठा कपायद्वार कहते है ॥

**॥ सवेविचउकसाया लेसछक्कगप्भतिरियमणुएसु**
**नारयतेऊवाऊ विगलावेमाणियतिलेसा ॥ १४ ॥**

**॥ थावरसुरनेरइया असघयणायविगलछेवट्ठा**
**सघयणछक्कगभ्भय नरतिरिएसुमुणेयवं ॥ ११ ॥**

॥ ( **थावरसुरनेरइया** ) पाच स्थावर तेरे देवता और एक नारक ऐसे सब मिलके उगणीसदडकोके विषे (**असघयणाय**) सघयण नही होते है (**विगलछेवट्ठा**) और तीन विकलेंद्रिको एक छेवठा होते है (**संघयणछक्कगप्भय**) छे सघयण गर्भजको ( **नरतिरिएसुविमुणेयवं** ) मनुष्य और तिर्यंचको जान लेना ॥ इति चौविस दडक सघयण द्वार ॥ ३ ॥ ११ ॥

॥ अब चोथा सज्ञाद्वार कहते है ॥

**॥ सवेसिचउदहवा सन्नासवेसुरायचउरसा**
**नरतिरियछसठणा हुडाविगलिदिनेरइया ॥ १२ ॥**

॥ ( **सवेसिचउदहवा** ) सब दडकोके विषे चार दश तथा सोले ( **सन्ना** ) सज्ञा होते है ॥ इति चोवीश दडके चतुर्थ सज्ञाद्वार ॥

॥ अब पचमा सम्थानद्वार कहते है ॥

॥ ( **देवनरअहियलक्ख** ) देवताका वैक्रिय शरीर एक लाख जोजनका होता है और मनुष्यका वैक्रिय शरीर एक लाख जोजनमें कुछ अधिक होता हे ( **तिरियाणनवयजोयणसयाइ** ) और तिर्यंचका वैक्रिय शरीर नवसे जोजनका ( **दुगुणतुनारयाण** ) और नारकका शरीर मूलसें दुना होते है ( **भणियवेउव्वियसरीर** ) इसप्रकारे वैक्रिय शरीरका प्रमाण कहा ॥ ९ ॥

॥ अब एक वैक्रिय शरीर कितनो काल रहे वह देखलाते हे ॥

## ॥ अतमुहुत्तनिरये मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु
## देवसुअद्धमासो उक्कोसविउव्वणाकालो ॥ १० ॥

॥ (**अतमुहुत्तनिरये**) नारकके वैक्रिय शरीरका काल अतर्मूहूर्त्तका होते है फेर दुसरा करणा पडता है (**मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु**) मनुष्य और तिर्यंचके वैक्रिय शरीरका काल मान चार मुहूर्त्तका हे ( **देवेसुअद्धमासो** ) और देवोके वैक्रिय शरीरका काल एक पक्षदिनका ( **उक्कोसवि-उव्वणाकालो** ) इस प्रकारसें वैक्रिय शरीरका उत्कृष्टकालमान कहा है ॥ इति शरीर अवगाहना द्वार २ ॥ १० ॥

॥ अब तीसरा संघयणद्वार कहत है ॥

॥ गप्भतिरिसहस्सजोयण वणस्सईअहियजोयणसहस्सं
नरतेइदितिगाऊ वेइंदियजोयणेवार ॥ ७ ॥

॥ ( गप्भतिरिसहस्सजोयण ) गर्भजतिर्यंचका शरीर एक हजार जोजनका है ( वणस्सईअहियजोयणसहस्स ) और वनस्पतिकायका शरीर एक हजार जोजनसें कुछ अधिक होते है ( नरतेइंदितिगाऊ ) मनुष्य और तेइद्रिका शरीर तिन गाउका होते है ( बेइदियजोयणेवार ) और दोइद्रिका शरीर बारह जोजनका है ॥ ७ ॥

॥ जोयणमेगचउरिंदि देहमुच्चत्तणसुएभणिय
वेउवियदेहपुण अगुलसखसमारभे ॥ ८ ॥

॥ ( जोयणमेगचउरिंदि ) एक जोजन चौरद्रिका ( देहमुचत्तणसुएभणिय ) शरीरका उचपणा सुत्रमे कहा है ( वेउव्वियदेहपुण ) फेर वैक्रिय शरीरका अनुमान कहते है ( अगुलसखसमारभे ) आरभतीवेर सदेवअगुलके सख्यातमे भागे होते है ॥ ८ ॥

॥ देवनरअहियलक्ख तिरियाणनवयजोयणसयाइ
दुगुणतुनारयाण भणियवेउवियसरीर ॥ ९ ॥

॥ ( देवनरअहियलक्ख ) देवताका वैक्रिय शरीर एक लाख जोजनका होता है और मनुष्यका वैक्रिय शरीर एक लाख जोजनमें कुछ अधिक होता है ( तिरियाणनवयजोयणसयाइ ) और तिर्यंचका वैक्रिय शरीर नवस जोजनका ( दुगुणतुनारयाण ) और नारकका शरीर मूलमें दुना होते है ( भणियवेउव्वियशरीर ) इसप्रकारे वैक्रिय शरीरका प्रमाण कहा ॥ ९ ॥

॥ अब एक वैक्रिय शरीर कितनो काल रहे वह दिखलाते है ॥

**॥ अतमुहुत्तनिरये मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु**
**देवेसुअद्धमासो उक्कोसविउव्वणाकालो ॥ १० ॥**

॥ **(अतमुहुत्तनिरये)** नारकके वैक्रिय शरीरका काल अतर्मूहूर्त्तका होते है फेर दुसरा करणा पडता है **(मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु)** मनुष्य और तिर्यंचके वैक्रिय शरीरका काल मान चार मुहूर्त्तका है **( देवेसुअद्धमासो )** और देवोंके वैक्रिय शरीरका काल एक पक्षदिनका **( उक्कोसविउव्वणाकालो )** इस प्रकारसें वैक्रिय शरीरका उत्कृष्टकालमान कहा है ॥ इति शरीर अवगाहना द्वार २ ॥ १० ॥ 

॥ अब तीसरा सघयणद्वार कहत है ॥

॥ गब्भतिरिसहस्सजोयण वणस्सईअहियजोयणसहस्सं
नरतेइदितिगाऊ वेइंदियजोयणेबार ॥ ७ ॥

॥ ( गब्भतिरिसहस्सजोयण ) गर्भजतिर्यंचका शरीर एक हजार जोजनका है ( वणस्सईअहियजोयणसहस्स ) और वनस्पतिकायका शरीर एक हजार जोजनसें कुछ अधिक होते है ( नरतेइंदितिगाऊ ) मनुष्य और तेइद्रिका शरीर तिन गाउका होते है ( वेइंदियजोयणेबार ) और दोइद्रिका शरीर बारह जोजनका है ॥ ७ ॥

॥ जोयणमेगचउरिंदि देहमुच्चत्तणसुएभणिय
वेउव्वियदेहपुण अंगुलसंखसमारंभे ॥ ८ ॥

॥ ( जोयणमेगचउरिंदि ) एक जोजन चौरिद्रिका ( देहमुच्चत्तणसुएभणिय ) शरीरका उचपणा सूत्रमे कहा हे ( वेउव्वियदेहपुण ) फेर वैक्रिय शरीरका अनुमान कहते है ( अंगुलसंखसमारंभे ) आरंभतीवेर सदेवअंगुलके सख्यातमे भागे होते हे ॥ ८ ॥

॥ देवनरअहियलक्ख तिरियाणनवयजोयणसयाइ
दुगुणंतुनारयाण भणियवेउव्वियसरीर ॥ ९ ॥

॥ ( चउगब्भतिरियवाउसु ) गर्भजतिर्यंचको और वाउकायको औदारिक वैक्रिय तेजस और कर्मण ऐसे चार शरीर होते है ( मणुआणपच ) ओर मनुष्यको पाचोही शरीर होते है (सेसतिसरीरा ) बाकीके एकादश दडकोके विषे तिन तिन शरीर हे इति १ शरीरद्वार ॥ ५ ॥

॥ अब दुसरा अवगाहनाद्वार कहते है ॥

( थावरचउगेदुहओ ) वनस्पतिवरजके चार स्थावरको जघन्य और उत्कृष्ट ऐसे दो प्रकारे ( अगुलअसखभागतणु ) अगुलके असख्यातमे भागे शरीरकी अवगाहना होति है ॥ ५ ॥

## ॥ सबेसिंपिजहन्ना साहावियअगुलस्सअसखसो उक्कोसपणसयधणू नेरइयासत्तहत्थसुरा ॥ ६ ॥

॥ ( सव्वेसिंपिजहन्ना ) ( चार स्थावरवरजके ) सब दडकोके विषे जघन्यसे ( साहावियअंगुलस्सअसखसो ) स्वाभाविक अगुलके असख्यातमे भागे शरीर होते है ( उक्कोसपणसयधणू ) और उत्कृष्टी अवगाहना पाचसे धनुष्यकी (नेरइया) नारकीके जीवोंकी है ( सत्तहत्थसुरा ) और देवोंका उत्कृष्टा शरीरमान सात हाथका होता है ॥ ६ ॥

॥ दिठीदंसणनाणे जोगुवओगोववायचवणठिई
पज्जत्तिकिमाहारे सन्निगइआगईवेए ॥ ४ ॥

॥ ( दिठी ) दृष्टिद्वार १० ( दसण ) दर्शनद्वार ११ ( नाणे ) ज्ञानद्वार १२ अज्ञान द्वार १३ ( जोगु ) योगद्वार १४ ( वओगो ) उपयोगद्वार १५ ( ववाय ) उपपातद्वार १६ ( चवण ) च्यवनद्वार १७ ( ठिइ ) स्थितिद्वार १८ ( पज्जत्ति ) पर्याप्तिद्वार १९ ( किमाहारे ) किमाहारद्वार २० ( सन्नि ) सज्ञाद्वार २१ ( गई ) गतिद्वार २२ ( आगई ) अगति द्वार २३ ( वेद ) वेदद्वार २४ इति चौवीश ॥ ४ ॥

॥ अब इस चोवीश दंडकोंके विषे कुणशा कुणशा द्वार आवेगे वह देखलाते है ॥

**प्रथम शरीरद्वार**

॥ चउगभ्यतिरियवाउसु मणुआणपचसेसतिसरीरा
थावरचउगेदुहओ अगुलअसखभागतणू ॥ ५ ॥

॥ ( **नेरइआ** ) सात नारकको १ ( **असुराई** ) असुरादि दश भुवनपतिका १० ( **पुढवाई** ) पृथ्वीकायादि पाच स्थावरके ५ ( **बेइंदियादओचेव** ) दो इंद्रियादि विकलेंद्रिके ३ ( **गब्भयतिरिय** ) गर्भजतिर्यचका १ ( **मणुस्सा** ) गर्भज मनुष्यका १ ( **वतर** ) व्यंतरका १ ( **जोइसिय** ) ज्योतिषि देवोका १ ( **वेमाणि** ) और वैमानिक देवोका १ ऐसे सब मिलकर चोवीश दंडक समझ लेना ॥ २ ॥

॥ अब चोवीश दंडकके चोवीश द्वार कहते है ॥

## ॥ संखित्तयरीउइमा सरीरमोगाहणायसंघयणा
## सन्नासंठाणकसाय लेसइंदीयदुसमुघाया ॥ ३ ॥

॥ ( **संखित्तयरीउइमा** ) यह संघणी संक्षेप मात्र है ( **सरीर** ) शरीरद्वार १ ( **ओगाहणाय** ) अवगाहनाद्वार २ ( **संघयणा** ) संघयणद्वार ३ ( **सन्ना** ) संज्ञाद्वार ४ ( **संठाण** ) संस्थानद्वार ५ ( **कसाय** ) कषायद्वार ६ ( **लेस** ) लेश्याद्वार ७ ( **इंदिय** ) इंद्रियद्वार ८ ( **दुसमुग्घाया** ) दो प्रकारे समुद्घातद्वार ९ ॥ ३ ॥

॥ ॐ आनन्दघन गुरुभ्यो नमः ॥

# ॥ अथ श्री दंडकप्रकरण मूलसहितं हिन्दी अनुवाद प्रारम्भ ॥

॥ नमिउचउवीसजिणे तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ
दडगपणहितेच्चिय थोसामिसुणेहभोभव्वा ॥ १ ॥

(नमिउचउवीसजिणे ) चोवीशे जिनस्वोरोको नमस्कारकरके ( तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ ) उसके सूत्रक विचारसे लेशमात्र कहनसे ( दटगपएहितेचिय )दडगक पदवरक ( थोसामिसुणेहभोभव्वा ) म कहताहु सो हे भव्य तुम सुनो ॥ १ ॥

॥ निचेकी गाथास चौवीश दडकके नाम देखलाते हे ॥

॥ नेरइआअसुराई पुढवाईवेइदियादओचेव
गभ्भयतिरियमणुस्सा वतरजोइसियवेमाणी ॥ २ ॥

॥ ( तह ) फिर तैसें ही ( बुद्धबोहिगुरुबोहिया ) बुद्धबोधित सिद्ध हुए वह गुर उवदेशसें १३ ( एगसमयएगसिद्धाय ) एक समयमें एकही सिद्ध होए ( एगसमएविअ-णेगा ) एक सिद्ध महावीर आदि १४ और एक समयमें अनेक ( सिद्धातेणेगसिद्धाय ) सिद्ध होये वह रुषभादि १५ ॥ ५९ ॥

## ॥ जइआइहोइपुच्छा जिणाणमग्गमिउत्तरतइया इक्कसनिग्गोयस्स अणतभागोयसिद्धिगओ ॥ ६० ॥

॥ ( जइआइहोइपुच्छा ) जिस जिस समयपर भगवन्तको पुछनेमें आवै ( जिणा-णमग्गमिउत्तरतइया ) उस उस समयपर जिनस्वर महाराजके मार्गमें यह ही उत्तर मिलता है कि ( इक्कसनिग्गोयस्सअणतभागोय ) एक निगोदके अनन्तमे भागे ( सिद्धिगओ ) सिद्धोंमें गये है इति श्रीमद् महायोगीन्द्र श्री आनन्दघन महाराजके चरणोंपाशक ॥

॥ अध्यात्म जितमुनिविरचित हिन्दीअनुवादसहित नवतत्त्व प्रकरण समाप्तम् ॥

॥ ( गिहिलिंगसिद्ध ) गृहीलिंगे सिद्ध हुये ( भरहो ) वह भरतादि ५ ( वलकलचीरीय ) वल्कल चीरीयादि तापसके वेषमें जो सिद्ध हुये ( अन्नलिंगम्मि ) वह अन्यलिंगे सिद्ध जानना ६ ( साहुसलिंगसिद्धा ) साधुके वेषमें जो सिद्ध हुए वह स्वलिंगसिद्ध ७ ( थीसिद्धाचदणापमुहा ) स्त्रीके लिंगमे जो सिद्ध हुए वह चन्दन बालादि लेकर ८ ॥ ५७ ॥

॥ पुसिद्धागोयमाई गगेयाईनपुसयासिद्धा
पत्तेयसयबुद्धा भणियाकरकडुकविलाई ॥ ५८ ॥

॥ ( पुसिद्धागोयमाई ) पुरष लिंगे सिद्ध गौतमादि ९ ( गागेयाईनपुसयासिद्धा ) गगेयादि जो सिद्ध हुए वह नपुसकलिंगे सिद्धा १० ( पत्तेयसयबुद्धा ) प्रतेक बुद्धसिद्ध और स्वय बुद्ध अनुक्रमसें ( भणिया ) कहा ( करकडु ) करकडु राजा ११ ( कविलाई ) और कपिल आदि कहे १२ ॥ ५८ ॥

॥ तहबुद्धबोहिगुरुबोहिया इगसमयएगसिद्धाय
एगसमएविअणेगा सिद्धातेणेगसिद्धाय ॥ ५९ ॥

॥ ( जिण ) जिनसिद्ध १ ( अजिण ) अजिनसिद्ध २ ( तित्थ ) तीर्थसिद्ध ३ ( तित्था ) अतिर्थसिद्ध ४ ( गिहि ) गृहीलिंगेसिद्ध ५ ( अन्न ) अन्यलिंगेसिद्ध ६ ( स-लिंग ) स्वलिंगेसिद्ध ७ ( थी ) स्त्रीलिंगेसिद्ध ८ ( नर ) पुम्पलिंगेसिद्ध ९ (नपुसा) नपुंसकलिंग सिद्ध १० ( पत्तेअ ) प्रत्येक बुद्धसिद्ध ११ ( सयबुद्धा ) स्वयबुद्धसिद्ध १२ ( बुद्धबोहि ) बुद्धबोधिसिद्ध १३ ( इकणिकाय ) एकसिद्ध १४ और अनेकसिद्ध १५ यह सिद्धक पद्रह भेद सक्षयस कहा फिर विवरा देखलाते है ॥ ५५ ॥

॥ जिणसिद्धाअरिहता अजिणसिद्धायपुंडरियापमुहा
गणहारितित्थसिद्धा अतित्थसिद्धायमरुदेवी ॥ ५६ ॥

॥ ( जिणसिद्धा ) तीर्थंकर होके मोक्ष गये वह तीर्थंकरसिद्ध ( अरिहता ) ऋषभादि अरिहतसिद्ध १ ( अजिणसिद्धायपुंडरियापमुहा ) अजिनसिद्ध सामान्य केवली पुंडरिक गणधर आदि २ ( गणहारितित्थसिद्धा ) गणधर गौतमादि तीर्थ सिद्ध ३ ( अतित्थसिद्धाय-मरुदेवी ) अतीर्थसिद्ध वह मरुदेवी ४ ॥ ५६ ॥

॥ गिहिलिंगसिद्धभरहो वलकलचीरीयअन्नलिगम्मि
साहुसलिगसिद्धा थीसिद्धाचदणापमुहा ॥ ५७ ॥

हुआ हो जिसको ( सम्मत्त ) सम्यक् ( तेसिं ) तिस जीवको ( अवड्ढ ) अर्ध ( पुग्गल-परिअट्टो ) पुद्गल परावर्तनक उसको परिभ्रमण करना होगा ( चेव ) निश्चकरेके ( ससारो ) समारमें बाद मोक्षमें जावेंगे ॥ ५३ ॥

## ॥ उस्सप्पिणीअणतापुग्गलपरिअट्टओ मुणेअव्वो तेणतातीअद्धाअणागयद्धाअणतगुणा ॥ ५४ ॥

॥ ( उस्सप्पिणीअणता ) अनन्ती उत्सर्पिणी और अनन्ती अवसर्पिणी जाने पर ( पुग्गलपरिअट्टओमुणेअव्वो ) एक पुद्गल परावर्त्तन होत है ( तेणतात्तीअद्धा ) तेसा अनन्ता पुद्गल परावर्त्तन अतितकाले हो चुके ( अणागयद्धाअणतगुणा ) और अनागतकाल अनन्तगुणा आगे जावेंगे ॥ ५४ ॥

॥ अब सिद्धोके पन्द्रह भेद कहते है ॥

## ॥ जिणअजिणतित्थतित्था गिहिअन्नसलिगथीनरनपुसा पत्तेअसयबुद्धा बुद्धबोहिकणिकाय ॥ ५५ ॥

॥ ( जीवाइ ) जीवादि लेकर ( नवपयत्थे ) नव पदार्थको ( जोजाणइ ) जो जीव जाणते हे ( तस्सहोइसम्मत्त ) उस जीवको अवश्यही सम्यक्त हो ( भावेणसद्दहतो ) और भावसें जो रद्द है तो ( आयाणमाणेवि ) अज्ञान जीवोको भी ( सम्मत्त ) सम्यक् प्राप्ति हो ॥ ५१ ॥

॥ सव्वाइजिणेसरभासिआइ वयणाईनन्नहाहुति
इअवुद्धीजस्समणे सम्मत्तनिच्चलतस्स ॥ ५२ ॥

॥ ( सव्वाइ ) सब प्रकारसें ( जिणेसरभासिआइ ) जिनेश्वर महाराजके कहे हुए ( वयणाई ) वचन ( नन्नहाहुति ) अन्यथा नही है लेकीन सत्य है ( एअवुद्धीजस्समणे ) ऐसी बुद्धि जिसको हो ( सम्मत्तनिच्चलतस्स ) उस प्राणीको निश्चय सम्यक् हो ॥ ५२ ॥

॥ अतोमुहुत्तमित्तपि फासिअहुज्जजेहिंसम्मत्त
तेसिअवड्ढपुग्गल परिअट्टोचेवससारो ॥ ५३ ॥

॥ ( अतोमुहूत्तमित्तपि ) एक अन्तर मुहूर्त्त मात्रभी ( फासिअहुज्जजेहि ) स्पर्श

केवलज्ञान ( खइए ) क्षायिक ( भाव ) भावे हे ( परिणामी ) परिणामी हे ( एअपुण ) यह पुन ( होइजीवत्तं ) जीवत्वपना हे ॥ ४९ ॥

॥ अब अल्प बहुत्वद्वार कहत हे ॥

॥ थोवानपुससिद्धा थीनरसिद्धाकमेणसखगुणा
इअमुक्खतत्तमेअ नवत्तत्तालेसओभणिआ ॥ ५० ॥

॥ ( थोवा ) सबसे कम ( नपुस ) नपुंसक ( सिद्धा ) सिद्ध हुवा ( थी ) नपुंसकसे स्त्रीसिद्ध सख्यातगुणी अधीक हे स्त्री सिद्धसे ( नरसिद्धा ) पुरूप सिद्ध सख्यातगुणे सिद्ध हुए ( कमेणसखगुणा ) अनुक्रमें सख्यातगुणा जानना ( इअमुक्ख ) यह मोक्षके ( तत्तमेअ ) तत्त्व इस प्रकारमें नव भेद कहे ( नवतत्तालेसओभणिआ ) इस प्रकारे नव तत्त्व सक्षेपसे कहे गये ॥ ५० ॥

॥ जीवाइनवपयत्थे जोजाणइतस्सहोइसम्मत्तं
भावेणसद्दहतो अयाणमाणेविसम्मत्त ॥ ५१ ॥

**॥ फूसणाअहिआकालो इगसिद्धपडुचसाइओणतो**

**पडिवायाभावाओ सिद्धाणअतरनत्थि ॥ ४८ ॥**

॥ ( **फूसणा** ) स्पर्शना सिद्ध जीवोंकी ( **अहिआ** ) अधिक है यह चौथा द्वार ४ ( **कालो** ) काल ( **इगसिद्धपडुचसाइओणतो** ) एक सिद्ध आश्रित सादि अनन्त स्थिति है और अनेक सिद्ध आश्रीन अनादि अनंत स्थिति हे ॥ इति कालद्वार ५ ( **पडिवायाभावाओ** ) सिद्धाके जीवोंको पिछा पडनेका अभाव हे ॥ इति छठा द्वार ६ ( **सिद्धाणअतरनत्थि** ) सिद्धोके जीवोंको अंतर नही है कालकृत ओर क्षेत्रकृत दोनासें इति सातमा द्वार ॥ ४८ ॥

॥ अब भागद्वार कहत है ॥

**॥ सव्वजियाणमणते भागेतेतेसिदसणनाण**

**खइएभावेपरिणामि एअपुणहोइजीवत्त ॥ ४९ ॥**

॥ ( **सव्वजियाणमणते** ) सब ससारी जीवोंसे सिद्धके जीवा अनंतमे ( **भागे** ) भागे है इति आठमो द्वार ८ ( **तेतेसिदसणनाण** ) उन सिद्धोके जीवोंको केवलदर्शन और

॥ ( **नरगइ** ) मनुष्यगतिसें १ ( **पणिंदि** ) पचेंन्द्रिसें २ ( **तस** ) त्रसकायसे ३ ( **भव** ) भव्यपणसें ४ ( **सन्नि** ) सनीपचेन्द्रिसें ५ ( **अहक्खाय** ) यथाख्यातचारीत्रसें ६ ( **खइअसम्मत्ते** ) क्षायकसम्यक्त्वसें ७ ( **मुक्खो** ) मोक्ष जाते है और ( **णाहार** ) अणहारीक पदस ८ ( **केवलदसण** ) केवल दर्शनसें ९ ( **नाणे** ) और केवलज्ञानसे इन दश मार्गणा द्वारसे जीवों मोक्ष जाते है १० ( **नसेसेसु** ) परन्तु शेष मार्गणाओसें मोक्ष नही जाते ॥ ४६ ॥

॥ इति प्रथमद्वार ॥

॥ अब द्रव्यप्रमाण और क्षेत्रद्वार कहते है ॥

## ॥ दव्वपमाणेसिद्धाण जीवदव्वाणिहुतिणताणि
## लोगस्सअसखिज्झे भागेइक्कोयसव्वेवि ॥ ४७ ॥

॥ ( **दव्वपमाणेसिद्धाण** ) सिद्धोके द्रव्यकाप्रमाण ( **जीवदव्वाणिहुतिणताणि** ) सिद्धोमे जीवद्रव्य अनता है ॥ इति दुसरा द्वार २ ( **लोगस्सअसखिज्जेभागे** ) चौदह राजलोकके असख्यातमे भागमें ( **इक्कोय** ) एक सिद्ध और ( **सव्वेवि** ) सब सिद्ध रहते है ॥ इति तीसरा द्वार ३ ॥ ४७ ॥

॥ ( मत्त ) मोक्ष सत्य है ( सुद्ध ) शुद्ध ( पयत्ता ) पद ( विज्जत्तखकुसुमव्वनअसत्त ) यह विद्यमान हे परन्तु वह आकाशके कुसुमकी तरह असत्य नही हे ( मुक्खपत्तिपयतस्सओ ) यह मोक्षपदकी ( परूवणा ) प्ररूपणा ( मग्गणाईहिं ) मार्गणाद्वारको विचारसे कहते हे ॥ ४४ ॥

॥ गइइंदीएकाये जोएवेएकसायनाणेय
सजमदसणलेसा भवसम्मे सन्नि आहारे ॥ ४५ ॥

( गइ ) गतिमार्गणा १ ( इंदीए ) इन्द्रिमार्गणा ( काय ) कायमार्गणा ३ ( जोए ) योगमार्गणा ४ ( वेए ) वेदमार्गणा ५ ( कसाय ) कषायमार्गणा ६ ( नाणेय ) ज्ञानमार्गणा ७ ( सजम ) सयममार्गणा ८ ( दसण ) दर्शनमार्गणा ९ ( लेसा ) लेश्यामार्गणा १० ( भव ) भव्यमार्गणा ११ ( सम्मे ) सम्यक्मार्गणा १२ ( सन्नि ) सनिमार्गणा १३ ( आहारे ) आहारमार्गणा १४ ॥ ४५ ॥

॥ अब निचेकी गाथासें जीव कितनी मार्गणासें मोक्ष जात है सो देखलात हैं ॥

॥ नरगइपणिंदितसभव सन्निअहक्खायखइअसम्मत्ते
मुक्खोणाहारकेवल दसणनाणेनसेसेसु ॥ ४६ ॥

॥ ( **बारसमुहुत्तजहन्ना** ) बारह मुहूर्तकी जघन्यस्थिति ( **वेयणिए** ) वेदनीयकर्मकी है ( **अठनामगोएसु** ) आठ मुहूर्तकी जघन्यस्थिति नामकर्म और गोत्रकर्मकी है ( **सेसाणंत-मुहुत्त** ) शेष पाँच कर्मोंकी जघन्यस्थिति अन्तर मुहूर्तकी है ( **एयंबंधठिईमाण** ) इस प्रकारसे सब कर्मोंकी उत्कृष्टी और जघन्यसे स्थिति बंधका प्रमाण कहा ॥ ४२ ॥ इति बंधतत्वम् ॥

॥ अब अठारे गाथायोसे नवमा मोक्षतत्त्वका नव भेद और सिद्धोंके पन्द्रह भेद देखलाते है ॥

**॥ सतपयपरूवणया दव्वपमाणचखित्तफुसणाय**
**कालोअअंतरभाग भावेअप्पाबहुचेव ॥ ४३ ॥**

॥ ( **सतपयपरूवणया** ) सत्पदकी प्ररूपणाद्वार १ ( **दव्वपमाण** ) फिर सिद्धजीवोंके द्रव्यका प्रमाणद्वार २ ( **खित** ) क्षेत्रद्वार ३ ( **फूसणाय** ) सिद्धोंकी स्पर्शनाद्वार ४ (**कालोअ**) कालद्वार ५ ( **अंतर** ) अन्तरद्वार ६ ( **भाग** ) भागद्वार ७ (**भाव**) भावद्वार ८ (**अप्पाबहु**) और अल्प बहुत्वद्वार ९ ( **चेव** ) निश्चे यह मोक्षके नव द्वार कहे ॥ ४३ ॥

॥ प्रथम सत्पद प्ररूपणाद्वार स्वरूप देखलाते है ॥

**॥ सतसुद्धपयत्ता विज्जतंखकुसुमवनअसत**
**मुक्खत्तिपयंतस्सओ परूवणामग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥**

॥ ( नाणेयदसणावरणवेअणिए ) ज्ञानावरणी दर्शनावरणी वेदनी ( चेव ) निश्चय ( अतराएअ ) और अन्तराय इन चारो कर्मोंकी ( तीसकोडाकोडी ) तीस कोडाको ( अयराण ) सागरोपमकी ( ठिईयउक्कोसा ) उत्कृष्टी स्थिति कही है ॥ ४० ॥

**॥ सत्तरिकोडाकोडीमोहणिए वीसनामगोएसु**
**तित्तीसअयराइ आउठिइवधउक्कोसा ॥ ४१ ॥**

( सत्तरिकोडाकोडी ) सित्तर कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति (मोहणिए) मोहनीय कर्मकी है ( वीसनामगोएसु ) वीस कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति नामकर्म और गोत्रकर्मकी है ( तित्तीसअयराइ ) तेतीस सागरोपमकी ( आउ ) आयुकर्मकी ( ठिइ ) स्थिति कही ( वधउक्कोसा ) एसे सब कर्मोंकी उत्कृष्टी स्थितिका बंध कहा है ॥ ४१ ॥

**॥ वारसमुहुत्तजहन्ना वेयणिएअठनामगोएसु**
**सेसाणतमुहुत्त एयवधठिईमाणं ॥ ४२ ॥**

॥ अब आठोंही कर्मोंकी जघन्यस्थिति कहते है ॥

**॥ इहनाणदंसणावरण वेयमोहाउनामगोआणि**
**विग्घंचपणनवदु अठवीसचउतिसयदुपणविह ॥ ३९ ॥**

॥ ( **इहनाण** ) यह ज्ञानावरणीयकर्म १ ( **दसणावरण** ) और दुसरा दर्शनावरणीकर्म २ ( **वेयमोहाउनामगोआणि** ) तीसरा वेदनीयकर्म ३ ४ मोहीनीकर्म ५ आयुकर्म ६ नामकर्म और सातमा गोत्रकर्म ७ ( **विग्घ** ) अंतरायकर्म ८ ( **च** ) यह आठ कर्म ( **पण** ) ज्ञानावरणीयकी उत्तर प्रकृतियों पाँच है ( **नव** ) और दर्शनावरणीयकी उत्तरप्रकृति नव ( **दु** ) वेदनीकी प्रकृति दो ( **अठवीस** ) मोहीनीकर्मकी उत्तर प्रकृति अठावीस ( **चउ** ) आयुकर्मकी उत्तर प्रकृति चार ( **तिसय** ) नामकर्मकी उत्तर प्रकृति एकसो तीन ( **दु** ) गोत्रकर्मकी उत्तर प्रकृति दो ( **पण** ) और अंतराय कर्मकी उत्तर प्रकृति पाच ( **विह** ) एसे सब कर्मकीउत्तर प्रकृति एकसें अठावन जान लेना ॥ ३९ ॥

॥ अब आठोहि कर्मकी उत्कृष्टी स्थितिका बन्ध कहते हैं ॥

**॥ नाणेयदंसणावरण वेअणिएचेवअंतराएअ**
**तीस कोडाकोडी अयराणठिईयउक्कोसा ॥ ४० ॥**

जीवको दुख होता है ३ (मज्ज) मदराकीछाक समान मोहनीयकर्मका स्वभाव है जैसे मदिरासें जीव बेभान होजाते हे तसही मोहनीयकर्मके उपदसे जीव ससारमे मुझात हे यह कर्म आत्माका सम्यग्ज्ञानको और सम्यक् चारित्र गुणोको रोकते हे अर्थात् दबा देते है ४ (हड) खोडासमान आयुकर्म है जैसे खोडेमें पडे हुए चोर राजाके हुकम बिन नही निकल शगत है तैसे ही आयुकर्मके जोरसे जीव गतीसे नही निकल शगते हे ५ (चित्त) इस नामकर्मका स्वभाव चित्रकार जैसा हे यह कर्म आत्माके अरूपि धर्मको रोकते हे जेस चितारा अच्छा बुरा नाना प्रकारका चित्रामन बनाते है तसे ही यह नामकर्म आत्माको अछीबुरी गतियोंम पहुचा देत है नाना प्रकारके स्वरुपको धारण करा दते हे ६ (कुलाल) यह गोत्रकर्म कुभार जेसा हे जैसे कुभार अछे और बुरे नाना प्रकारके बरतन बनाते है तैसेही इस कर्मके उदयसें जीव ऊच निच कुलको धारण करते है ७ (भंडगारीण) इस अन्तराय कर्मका स्वभाव भंडारी जैसा हैं क्योंकि जब राजा किसीको दान देनके लिये भंडारीको कहे परन्तु भंडारी उसको देवे नहीं एसेही इस कर्मके उदयसे जीव दानादि नहीं कर शक्ते है ८ (जहएएसि-भावा) जैसा यह आठोही वस्तुका स्वभाव हे (कम्माण) तेसही आठोही कर्मोकाभी (विज्ञाण) विदमान है (तहभावा) तैसेही स्वभाव ॥ ३८ ॥

॥ अब कर्मोकी मूल तथा उत्तर प्रकृती कहते है ॥

**॥ पयइसहावोवुत्तो ठिईकालावहारणं**
**अणुभागोरसोनेओ पएसोदलसचओ ॥ ३७ ॥**

॥ ( **पयइसहावोवुत्तो** ) प्रकृतिबन्ध इसलिये कर्मोका स्वभाव ( **ठिईकालावहारण** ) कर्मोकी स्थिति—कालका निश्चय वह स्थितिबन्ध २ ( **अणुभागो** ) ३ अनुभाग बन्ध सो ( **रसोनेओ** ) कर्मोका रस जानना ( **पएसो** ) ४ प्रदेशबन्ध ( **दलसचओ** ) कर्मोके दलका सचय ॥ ३७ ॥

**॥ पडपडिहारसिमज्ज हडचित्तकुलालभडगारीण**
**जहएएसिंभावा कम्माणविजाणतहभावा ॥ ३८ ॥**

॥ **(पड)** पाटा, जैसे किसीके आखेपर बन्धे हुए पाटेके सयोगसे कुछ नहीं देखाए देते तेसे ही ज्ञानावरणीय कर्मके स्वभावसे आत्माके अनन्त ज्ञान नही दिखलाते है १ **(पडिहार)** द्वार पालकेसमान दर्शनावरणीय कर्मको स्वभाव हे जैसे राजाको दर्शन चाहनेवालेको द्वारपाल रोक देते है उसी तरह आत्माके दर्शनगुणको दर्शनावरणीय कर्म रोक देते हे २ **(असि)** तरवार, वेदनी कर्मका स्वभाव ऐसा है कि जैसे सक्कर खरडी तल्वारकी धारको चाटनेसे अच्छा लगता है मगर जब जीभ कटा-जाति हे तब दुख होते है वैसीही तरह शातावेदनीसे जीवको सुख होता है और अशातावेदनीसे

॥ पायच्छित्तविणओ वेयावच्चतहेवसज्झाओ
झाणउस्सग्गोविअ अभ्भितरओतवोहोइ ॥ ३५ ॥

॥ ( पायच्छित्त ) जो शुद्ध मनसें गुरु महाराजके पास आलोयणा लेना सो प्रायश्चित तप १ ( विणओ ) विनय तप २ ( वेयावच्च ) वेयावृत्य तप ३ (तहेवसज्झाओ) तसेही स्वाध्याय तप ४ ( झाण ) ध्यान प ध्यानका स्वरूप गुरगमसें धारना ५ ( उस्सग्गोविअ ) और उत्सर्ग तप ६ ( अभ्भितरओतवोहोइ ) ऐसे छे प्रकारसें अभ्यन्तर तप कहे ॥ ३५ ॥

॥ बारसविहतवोनिज्जराय बंधोचउविगप्पोअ
पयईठिइअणुभागो पएसभेएहिनायव्वो ॥ ३६ ॥

॥ ( बारसविह ) ऐसे सब मिलकर बारह भेदे ( तवो ) तप ( निज्जराय ) निर्जराके लिये है । इति निर्जरातत्त्वम् ( बंधो ) अब बंधतत्त्व ( चउविगप्पोअ ) चार भेदे हे ( पयई ) १ प्रकृतिबंध ( ठिइ ) स्थितिबंध ( अणुभागो ) ३ अनुभाग बंध ( पएस ) और प्रदेशबंध ४ ( भेएहिं ) ऐसे चार भेदसें ( नायव्वो ) जानना ॥ ३६ ॥

॥ अब बंधतत्त्वका विशेष स्वरूप देखलाते हे ॥

**॥ तत्तोअअहक्खाय खायसव्वम्मिजीवलोगम्मि**
**जचरिऊणसुविहिआ वच्चतिअयरामरठाण ॥ ३३ ॥**

॥ **(तत्तोअअहक्खायं)** उस पीछे पाँचमा यथाख्यात चारित्र **(खायंसव्वम्मिजीव-लोगम्मि )** यह चारित्र सब जीव लोगमें प्रसिद्ध है **( जचरिऊणसुविहिआ )** जिसका सेवन करनेसें साधु लोगों **( वच्चतिअयरामरंठाण )** अजरामरस्थानको पाते है ॥ ३३ ॥ इति संवर तत्त्वम् ॥

॥ अब निर्जरा तत्त्वके बारह भेद कहत है ॥

**॥ अणसणमूणोअरिआ वित्तीसखेवणरसच्चाओ**
**कायकिलेसोसलीण-यायवज्झोतवोहोइ ॥ ३४ ॥**

॥ **( अणसण )** सर्वथा आहारका त्याग सो अनशन तप १ **( ऊणोअरिआ )** आहार कम करना सो ऊनोदरी तप २ **( वित्तीसखेवण )** वृत्तिका संक्षेप करना सो वृत्तिसंक्षेप तप ३ **( रसच्चाओ )** विगयका त्याग करना सो रस त्याग तप ४ **( कायकिलेसो )** लोचादि जो कष्ट करना वह कायाक्लेश तप ५ **( सलीणयाय )** सब इन्द्रियोंका दमन करना वह संलीनता तप **(वज्झोतवोहोइ)** इस प्रकारसें बाह्य तपके छे भेद कहे ॥ ३४ ॥

॥ ( लोगसहावो ) दशमी लोकस्वरूप भावना इसमे चोदह राजलोकका स्वरूप विचारना ( बोहीदुल्लहा ) ११ मी सम्यक्त्वकी प्राप्ति होनी बहोत दुर्लभ है ऐसा विचारना वह बोधि दुर्लभ भावना (धम्मस्स) बारहवी धर्म भावना इसमे भव्य ऐसा विचारे कि ससारसमुद्रसें पार होनेके लिये जो जिनेस्वर महाराजने कहा हुआ धर्म है उसका (साहगाअरिहा) साधक अरिहतादि मिलना दुर्लभ है ( एआओ ) इस प्रकारसें कही हुइ ( भावणाओ ) भावनाओ ( भावेअव्वा ) विचारनी ( पयत्तेण ) प्रयत्नसें ॥ ३१ ॥

॥ अब चारित्रके पाँच भेद कहते है ॥

## ॥ सामाइअत्थपढमं छेओवट्ठावणभवेबीअ परिहारविसुद्धय सुहुमतहसपरायच ॥ ३२ ॥

॥ (सामाइ) सामायिक चारित्रद्रव्य और भावसें (अत्थ) इधर (पढम) पहिले है १ ( छेओवट्ठवणंभवेबीअ ) छेदोपस्थापनीयचारित्र दुसरा है २ ( परिहारविसुद्धीय ) परिहार विशुद्धि चारित्र ३ (सुहुमतहसपरायच) फिर चोथा सुक्ष्मसपराय चारित्र ४ यह चारित्र दशमा गुणस्थानवाले मुनिको होते हो ॥ ३२ ॥

बिचारना सो २ (**संसारो**) ससारभावना इस भावनाम भव्य ऐसा विचारे कि मेरे जीवने चौरासी लक्ष योनिम परिभ्रमण करते अनंतेकाल चक्र हो गये हे इस ससारम पिता सो पुत्र और पुत्र सो पिता ऐसा उलट सुलट अनती वेर होत हे ऐसा विचारना सो ससार भावना ३ ( **एगयाय** ) एकत्व भावना इस भावनामे भव्य ऐसा चिंतवे कि मेरा जीव अकेलाही आये है और अकेलाही जावेंगे सुखदु:ख भी अकेलाही भोगेंगे ४ ( **अन्नत्त** ) अन्यत्त्व भावना इसमें भव्य ऐसा विचारे कि मेरा आत्मा अनन्त ज्ञानमयी हे और शरीर जड पदार्थहे शरीर आत्मा नही है न आत्मा शरीर है ऐसा सदैव विचारे ५ ( **असुइत्त** ) अशुचि भावना यह शरीर खून मॉस हड्डी मलमूत्र आदिसें भराहुआऐसा जो विचारना वह अशुचित्त्व भावना ६ ( **आसव** ) आस्रव भावना रागद्वेष और अज्ञान मिथ्यात्व आदिक जोरसें नये नये कर्मका जो आना अर्थात् शुभाशुभका विचार वह आस्रव ७ (**संवरोअ**)सवर भावना शुभाशुभ विचारको छोडकर स्वसरूपमे लीन रहना अर्थात् नवीन कर्मको आने नही देना वह निश्चय सवर और अकेला अशुभ विचारोको रोकदेना सो व्यवहार सवर भावना ८ ( **तह** ) तैसही (**निज्जरानवमी**) नवमी निर्जरा भावना निर्जराके दो भेद है एक सकाम निर्जरा और दुसरी अकाम निर्जरा ९॥ ३० ॥

**॥ लोगसहावोबोही दुल्लहाधम्मस्ससाहगाअरिहा**
**एआओभावणाओ भावेअव्वापयत्तेण ॥ ३१ ॥**

॥ ( खती ) क्षमा सब प्राणीमात्रपर सम दृष्टी रखे किन्तु यति क्रोदपर क्रोध न रखे (मद्दव) मानका त्याग करना उसको मार्दव धर्म कहते हे २ (अज्जव)किशीके साथ कपट न सो आर्जव धर्म ३ ( मुत्ती ) निरलोभता ४ ( तव ) तप जो इच्छाका निरोध करना व ( सजमे ) सतर प्रकार सयमका आराधन करना वही समय ६ (अ) और ( बोधव्वे ) ( सच्च ) सत्यधर्म ७ ( सोअ ) मन आदिको पवित्र रखना वह शौच धर्म ८ ( आकिंचण ) बाह्य अभ्यन्तर परीग्रहका त्याग सो अकिंचन धर्म ९ ( च ) और ( बंभ ) द्रव्यसें और भावसे जो मैथुनका त्याग करना वह ब्रह्मचर्य धर्म १० ( जइधम्मो ) एसे दश प्रकारे यति धर्म पा उसको यति कहना योग्य है इसमे जो विपरित हो वह यति नही समजना कुयति समजना ॥२९

॥ अब बारह भावना कहते है ॥

## ॥ पढमसणिच्चमसरण ससारोएगयायअन्नत्त
## असुइत्तआसवसवरोअ तहनिज्जरानवमी ॥ ३० ॥

॥ ( पढमम्णिच्च ) प्रथम अनित्यभावना इस भावनामें भव्यजीव ऐसा विचारे कि धन योवन आदि सब पदार्थ अनित्य है आत्माका मूल धर्म अविनाशी है १ (असरण) अशरण भावना कि मृत्युके समय इस जीवको ससारमें धर्म बिन कोई भी शरणभूत नही है एक धर्मही शरण है ऐसा

**॥ अलाभरोगतणफासा मलसक्कारपरीसहा**
**पन्नाअन्नाणसम्मत्त इअबावीसपरीसहा ॥ २८ ॥**

॥ **( अलाभ )** लाभान्तराय कर्मके उदयसे जो मागने परभी चीज न मिले तोभी समता रखे और विचारे कि अन्तराय कर्मका उदय है सो अलाभ परिसह १५ **( रोग )** ज्वरादि अति रोग आने परभी साधु चिकीत्सा करानेकी इच्छाभी न करे किन्तु सभावसे सहन करे सो रोग परिसह १६ **( तणफासा )** तृण स्पर्श परिसह साधुको तृण आदिको जो सथारो मिले तोभी शात चित्तसें वेदना सहन करे १७ **( मल )** मलपरिसह इस लिये शरीरपर जो पसीनेसें मेल चढ जावे तोभी स्नानादिकी इच्छा न करें १८ **( सक्कारपरीसहा )** सत्कारपरिसह, उत्कर्षमें न आवे, स्तुति करणेपर समचित्त रखे १९ **( पन्ना )** प्रज्ञा इस लिये बडी विद्वता होनेपरभी मुनि घमण्ड न रखे २० **( अन्नाण )** अज्ञान परिसह अज्ञानके उदयसे मुनि दुर्ध्यान न करें २१ **( सम्मत्त )** सम्यक्त्वपरिसह **( इअ )** इस प्रकारसें **( बावीसपरीसहा )** बावीशपरिसह जाणना २२ ॥ २८ ॥

॥ अब इसगाथासें दश प्रकारे यति धर्म कहते है ॥

**॥ खतीमद्दवअज्जव मुत्तीतवसजमेअबोधव्वे**
**सच्चसोअंआकिंचणञ्च बंभचजइधम्मो ॥ २९ ॥**

॥ ( आणवणि ) जो जीव अजीवको लान लेजानसें क्रिया लगे उसको आनयनिकी क्रिया कहते है १७ ( विआरणिआ ) जो जीव अजीवको विदारनसें विदारणि लगेसो क्रिया १८ ( अणभोगा ) अना उपयोगसे जो चीज रखम उठाना रखना तथा हलन चलनसे जो क्रिया लगे उसे अनाभोगीकी क्रिया कहते है १९ ( अणवकखपच्चइआ ) इस लोक तथा परलोकसें जो विरुद्ध आचरण करना उसे अनवकांक्षाप्रत्ययीकी क्रिया कहत हे २० ( अन्नापओग ) दुसरी प्रायोगिकी क्रिया २१ ( समुदाण ) समुदायकी क्रिया २२ ( पिज्ज ) माया ओर लोभ करनमें जो क्रिया लगे उसे प्रेमाकी क्रिया कहत ह २३ ( दोसे ) क्रोध ओर मानसें जो क्रिया लगे उसे द्वेषीकी क्रिया कहत है २४ ( इरिआवहिआ ) रस्ते चलनसें शरीरके व्यापारसें जो क्रिया लगे उसे इर्यापथिकीकी क्रिया कहते है २५ सो क्रिया अप्रमत्त साधु तथा सयोगी केवलीको भी लगति हैं ॥ २४ ॥ इति आश्रवतत्वम् ॥

॥ अब संवरका सत्तावन भेद कहत है ॥

**॥ समिईगुत्तिपरीसह जइधम्मोभावणाचरित्ताणि**
**पणतिदुवीसदसवारस्स पचभेएहिसगवन्ना ॥ २५ ॥**

॥ ( समिइ ) सुमति ( गुत्ति ) गुप्ति ( परीसह ) परिसह ( जइधम्मो ) यतिधर्म

॥ मिच्छादंसणवत्ती अपच्चक्खाणायदिट्ठिपुट्ठिअ
पाडुच्चिअसामंतो–वणीअनेसत्थिसाहत्थि ॥ २३ ॥

॥ ( मिच्छादंसणवत्ती ) जिनेंद्रके सिद्धांतसे जो विपरीत एकान्तक्रियारुची आत्म ज्ञानसे हिन बहिरात्मा सम्यक् हिन और दृष्टीरागी जिसको सत्यासत्यका निरणे नही सो मिथ्या दर्शनकी क्रिया ९ ( अपच्चक्खाणाय ) व्रतपचखान नही करनेसें जो क्रिया लगती है वह अप्रत्याख्यानिकी क्रिया १० ( दिट्ठि ) जो अशुभ दृष्टीसें देखना सो दृष्टीकी क्रिया ११ ( पुट्ठिअ ) जो रागादिसे कलुषितचित्ते स्त्री आदिके अगका स्पर्श करना सो स्पृष्टीकी क्रिया १२ ( पाडुच्चिअ ) जो अपना मनसे स्वपरका बुरा विचारना सो १३ ( सामंतोवणीअ ) अपना अश्व प्रमुखकी प्रशसासें हर्ष करना सो अथवा दुध दही घी आदिके भाजन खुला रखनेसें उसमे जो त्रस आदि जीव पडकर मरे उससें लगे सो सामंतोपनिपातीकी क्रिया १४ ( नेसत्थि ) नैसृष्टिकी क्रिया १५ ( साहत्थि ) स्वहस्तिकी क्रिया १६ ॥ २३ ॥

॥ आणवणिविआरणिआ अणभोगाअणवकखपच्चइआ
अन्नापओगसमुदा–णपिज्जदोसेरिआवहिआ ॥ २४ ॥

॥ ( **इंदिअ** ) इंद्रियो पाच ( **कसाय** ) क्रोधादि कषाय चार ( **अव्वय** ) प्राणातीपातादि अव्रत पाँच ( **जोगा** ) मनादि योग तीन ( **पच** ) पाँच ( **चउ** ) चार ( **पच** ) पाँच ( **तिन्नी** ) तीन ( **कमा** ) अनुक्रमसें जान लेना ( **किरिआओपणवीस** ) क्रिया पचीश ( **इमाउताओअणुक्कमसो** ) यह पचीस क्रियाको अनुक्रमसें कहत है ॥ २१ ॥

## ॥ काइयअहिगरणीआ पाउसिआपारितावणीकिरिया पाणाइवायारंभिअ परिग्गहियामायवत्तीय ॥ २२ ॥

॥ ( **काइय** ) कायाको अजतनासें वरतावनासो कायिकि क्रिया १ (**अहिगरणीआ**) जिस क्रियासें जीव नरकादिकका अधिकारि हो उसको अधिकरणिकी क्रिया कहते है जेसे कि शस्त्रआदिसें जीवोकी हत्या करना ( **पाउसिआ** ) जीव अजीवसें जो द्वेष करना वह प्राद्वेषिकी क्रिया ३ ( **पारितावणीकिरिया** ) अपनें जीवको या दुसरा जीवोको तकलीफ पहुचाना वह पारितापनिकी क्रिया ४ (**पाणाइवाय**)जो किसी जीवको प्राणोसे रहित करना वह प्राणातिपातिकी क्रिया ५ ( **आरंभिअ** ) जो खेति आदि आरंभका काम करना सो आरंभिकी क्रिया ६ ( **परिग्गहिया** ) जो परिग्रह रखना या परिग्रहे पर ममत्व रखना सो परिग्रहिकी क्रिया ७ ( **मायवत्तीअ** ) जो माया–कपटसें किसीको ठगना सो मायाप्रत्ययिकी क्रिया ८ ॥ २२ ॥

॥ थावरसुहुमअपज्ज साहारणमथिर मसुभदुभगाणि
दुस्सरणाइज्जजस थावरदसगविवज्जत्थ ॥ २० ॥

॥ ( थावर ) स्थावर नामकर्म १ ( सुहुम ) सुक्ष्म नामकर्म २ ( अपज्ज ) अनर्याप्ति नामकर्म ३ ( साहारण ) साधारण नामकर्म ४ ( अथिरं ) अस्थिर नामकर्म ५ ( असुभ ) अशुभ नामकर्म ६ ( दुभगाणि ) दुर्भाग्य नामकर्म ७ ( दुस्सर ) दु स्वर नामकर्म जो गधेकी तरह सुकना ८ ( अणाइज्ज ) अनादेय नामकर्म ९ ( अजस ) अपयश नामकर्म १० (थावरदसगविवज्जत्थ) यह स्थावरको दशको त्रसस विप्परित जान लेना ॥२०॥ इतिपापतत्वम्

॥ अब आश्रव तत्त्वके बयालीस भेद देखलाते है ॥

॥ इदिअकसायअव्वय जोगापंचचउपचतिन्नीकमा
किरिआओपणवीस इमाउताओअणुक्कमसो ॥ २१ ॥

॥ अब प्रद्गलका लक्षण कहते है ॥

अरति ३ शोक ४ भय ५ दुगछा ६ स्त्रीवेद ७ पुरुषवेद ८ नपुंसकवेद ९ पूर्वके सोल कषाय और यह नव नोकषाय सब मील २५ तथा पूर्वके २५ सब मिल साइठ (तिरियदुग) और तिर्यंचद्विक इस लिये तिर्यंचगति ६१ और तिर्यंचानुपूर्वी ६२ ॥ १८ ॥

## ॥ इगबितिचउजाईओ कुखगइउवघायहुतिपावस्स
## अपसत्थवण्णचउ अपढमसघयणसठाणा॥ १९ ॥

॥ (इग) एकेंद्रिजाति (बि) दोइन्द्रिजाति (ति) तेरिन्द्रीजाति (चउ) और चोरिन्द्रिजाति (जाईओ) ऐसे चार जाति नामकर्म यह सब मिलके उसठ (कुखगइ) अशुभ विहायोगति नामकर्म इस नामकर्मसें जीव गधेकी नाइ चले सो ६७ (उवघाय) उपघात नामकर्म ६८ (हुतिपावस्स) यह सब पापके भेद हे (अपसत्थवण्णचउ) अशुभ वर्णादि चार ७२ (अपढमसघयणसठाणा) प्रथमका सघयनको छोडकर ऋषभनाराच १ नाराच २ अर्धनाराच ३ कीलीका ४ और सेवठा यह पाच सघेयन और प्रथमका सस्थान छोडकर न्यग्रोध १ सादि २ कुब्ज ३ वामन ४ और हुडक यह पाच सस्थान सब मिलकर पापतत्वका व्यासी भेद हुआ॥ १९ ॥

॥ अब स्थावरका दशका कहते है ॥

॥ अब पाप तत्त्वके बयासी भेद कहते है ॥

## ॥ नाणतरायदसग नववीयेनीयसायमिच्छत्त
## थावरदसनरयतिगं कसायपणवीसतिरियदुग ॥ १८ ॥

॥ (**नाण**) पाँच ज्ञानावरणी मतिज्ञानावरणी १ श्रुतज्ञानावरणी २ अवधिज्ञानावरणी ३ मन पर्यवज्ञानावरणी ४ और केवल ज्ञानावरणी ऐसे पाँच (**अतराय**) अतराय दानान्तराय १ लाभान्तराय २ भोगातराय ३ उपभोगातराय ४ और वीर्यान्तराय यह पाच अन्तराय (**दसग**) ऐसे दश भेद कहे (**नववीये**) और नव दुसरा दर्शनावरणी कर्मके निंद्रा १ निंद्रानिंद्रा २ प्रचला ३ प्रचलाप्रचला ४ थिणद्धी ५ चक्षुदर्शनावरणी ६ अचक्षुदर्शनावरणी ७ अवधीदर्शनावरणी ८ और केवलदर्शनावरणी ९ ऐसे नव और पूर्वकादशमिलकर ओगुणीस (**नीय**) निचगोत्र २० (**असाय**) असातावेदनीकर्म २१ (**मिच्छत्त**) मिथ्यात्व मोहनीनामकर्म २२ (**थावर**) स्थावरको (**दस**) दशको इस दशकेका भेद आगे कहगे ३२ (**नरयतिग**) नरकत्रिक नरकगती नरकानुपूर्वी और नरक आयु ऐसे तीन ३५ (**कसायपणवीस**) कशाय पचीस सो देखलाते हे अनतानुबधी आदि क्रोधके चार तथा अनन्तानुबधि आदि मानके चार फिर अनतानुबधि आदि मायाके चार और अनन्तानुबधी आदि लोभके चार यह सोल कषाय अब नवनो कशाय कहते है हास्य १ रति २

२५ ( उज्जोय ) उद्योतनामकर्म २६ (**सुभखगइ**) शुभ विहायोगति जिस कर्मके उदयसे जीवकी हससमान चाली हो २७ ( **निमिण** ) निर्माण नामकर्म २८ ( **तसदस** ) त्रस दशक ३८ इस दशकेका भेद आगेकी गाथांसे कहेंगे ( **सुर** ) देवआयु नामकर्म ३९ ( **नर** ) मनुष्यआयु नामकर्म ४० ( **तिरियाउ** ) तिर्यंचआयु नामकर्म ४१ ( **तित्थयरं** ) और तीर्थकरनामकर्म ४२

॥ अब त्रसका दसका कहते है ॥

## ॥ तसवायरपज्जत्त पत्तेयथिरसुभचसुभगच
## सुस्सरआइज्जजस तसाइदसगइमहोइ ॥ १७ ॥

॥ ( **तस** ) त्रसनामकर्म १ ( **बायर** ) बादरनामकर्म २ ( **पज्जत्त** ) पर्याप्तनामकर्म एक लब्धि पर्याप्ता दुजाकरणपर्याप्ता ऐसे दो भेद ३ ( **पत्तेय** ) प्रत्येकनामकर्म ४ ( **थिर** ) स्थिरनामकर्म ५ ( **सुभं** ) शुभनामकर्म ६ ( **च** ) और ( **सुभग** ) सौभाग्यनामकर्म ७ ( **च** ) और ( **सुस्सर** ) सुस्वरनामकर्म जिसका स्वर कोकिलाकी तरह मधुर हो ८ ( **आइज्जा** ) आदेयनामकर्म ९ ( **जस** ) यशकीर्तिनामकर्म १० ( **तसाइ** ) त्रस आदिक ( **दसग** ) दशक ( **इमहोइ** ) इस प्रकारसे है ॥ १७ ॥ इतिपुण्यतत्त्वम् ॥

॥ अब पुण्य तत्वके बयालिस भेद कहते है ॥

## ॥ साउच्चगोअमणुदुग सुरदुगपचिंदिजाइपणदेहा
## आइतितणुणवंगा आइमसघयणसठाणा ॥ १५ ॥

॥ ( **सा** ) शाता वदनी कर्म १ ( **उच्चगोअ** ) उच गोत्र कर्म २ ( **मणुदुग** ) मनुष्य गति ३ और मनुष्यानुपूर्वी ४ ( **सुरदुग** ) देवगति ५ और देवानुपूर्वी ६ ( **पचिंदिजाइ** ) पचेन्द्रि जातीनाम कर्म ७ ( **पणदेहा** ) औदारीकादि शरीर पाँच १२ ( **आइतितणु** ) आदिके तीन शरीरका ( **णुवगा** ) अगोपाग १५ ( **आइमसघयणसठाणा** ) आदि वज्ररुषभनाराच सवयण १६ और प्रथम सम्थान समचोरस १७ ॥ १५ ॥

## ॥ वण्णचउक्कागुरुलहु परघाऊसासआयवुज्जोय
## सुभखगइनिमिणतसदस सुरनरतिरियाउतित्थयर ॥१६॥

॥ ( **वण्णचउक्का** ) शुभवर्णादिचार २१ ( **अगुरुलहु** ) अगुरुलघु २२ ( **परघा** ) पराघातनाम कर्म २३ ( **ऊसास** ) शुभ स्वासोस्वास नामकर्म २४ (**आयव**) आतापना नामकर्म

॥ परिणामिजीवमुत्त सपएसाएगखित्तकिरिआय
णिच्चकारणकत्ता सव्वगयइयरअप्पवेसे ॥ १४ ॥

॥ ( **परिणामि** ) छ द्रव्यम परीणामी कितना और अपरीणामी कितना निश्चयनयसे तो छेही द्रव्य अपरीणामी है और व्यवहारनयसे तो एक जीव दुसरा पुद्गल यह दो परीणामी बाकीके चार अपरीणामी हे १ ( **जीव** ) य छ द्रव्यमें एक जीवद्रव्य चेतन हे शेप पॉच द्रव्य अजीव अचेतन्य हे २ ( **मुत्त** ) यह छ द्रव्यम एक पुद्गल जो है वह मुर्त्तिमत हे बाकीके पाँच द्रव्य अमुत्त अरूपी है ( **सपएसा** ) यह छे द्रव्यम पाँच प्रदशी है और एक कालद्रव्य अप्रदशी हे ( **एग** ) यह छे द्रव्यमें धर्म अधर्म और आकाश य तीन द्रव्य एक हे शेप तीन अनक है ( **खित्त** ) यह छ द्रव्यमें एक आकाश द्रव्य जो हे वह क्षेत्र हे शेप पॉच क्षेत्री हे ( **किरिआय** ) इस छे द्रव्यम जीव और पुद्गल यह दो द्रव्य सक्रिय हे शेप चार द्रव्य अक्रिय हे ( **णिच्च** ) ये छे द्रव्यमें व्यवहारसें तो धर्म अधर्म आकाश और काल यह चार नित्य है बाकीके दो द्रव्य अनित्य है और निश्चयसें छेही द्रव्य नित्य हे ( **कारण** ) जीवको छोडकर पाँच द्रव्य कारण हे और जीवद्रव्य अकारण हे ( **कत्ता** ) ये छे द्रव्यम जीव तथा पुद्गल व्यवहारसे कर्त्ता बाकीके चार अकर्त्ता ( **सव्वगय** ) ये छ द्रव्यमें एक आकाशद्रव्य लोकालोक व्यापक है और बाकीके पाँच द्रव्य लोक व्यापी है ( **इयर** ) इतर ( **अप्पवेसे** ) कोई द्रव्य कोईसें मिले नही ॥ १४ ॥ इति अजीवतत्त्वम् ॥

**॥ समयावलीमुहुत्तं दीहापक्खायमासवरिसाय**
**भणिओपलिआसागर उस्सप्पिणीसप्पिणीकालो ॥ १२ ॥**

॥ ( **समय** ) समय, अतिसुक्ष्म कालको समय कहते है ऐसे असख्य समयकी ( **आवली** ) एक आवलिका होती है ( **मुहुत्त** ) मुहूरतकालका प्रमाण आवलीकी सख्यामें पूर्वकी बारवी गाथासें जाणलेना ( **दीहा** ) ऐसें तीस मुहूर्तका एक अहोरात्री दिन ( **पक्खा** ) ऐसे पद्रह दिनका एक पक्ष ( **य** ) और ( **मास** ) ऐसे दो पक्षका एक मास ( **वरिसा** ) ऐसे बारह मासका एक वर्ष ( **य** ) और ( **भणिओ** ) कहा हे ( **पलिआ** ) ऐसे असख्य वर्षका एक पल्योपम, ऐसे दश कोडाकोडी पल्योपमका ( **सागर** ) एक सागरोपम, ऐसे दश कोडाकोडी सागरोपममिलनेसें एक ( **उस्सप्पिणी** ) उत्सर्पिणी और ऐसे दश कोडाकोडी सागरोमकी एक ( **सप्पिणी** ) अवसर्पिणी होती है ( **कालो** ) एसे उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी मिलकर एक काल चक्र और ऐसे अनंते काल चक्र जानेपर एक पुद्गल परावरतन होते है । ऐसा अनता पुद्गल परावरतन होचुके और आगे होवेंगे इति कालद्रव्यका मान कहा ॥ १२ ॥

॥ अब द्रव्यका स्वरूप इग्यारे बोलसे देखलाते है ॥

॥ सद्दधयारउज्जोय पभाछायातवेहिआ
वण्णगंधरसाफासा पुग्गलाणतुलक्खण ॥ ११ ॥

॥ ( सद्द ) जीव शब्दादि जिन ( अंधयार ) अंधकार ( उज्जोय ) प्रकाश ( पभा ) ज्योति ( छाया ) छाया ( तवेहिआ ) सूर्य आदिकी आतापना ( वण्ण ) पांचोंही वर्ण ( गंध ) दोनु गंध ( रसा ) पांचरस ( फासा ) आठ स्पर्श ( पुग्गलाणतु ) पुद्गलका एसे ( लक्खण ) लक्षण है ॥ ११ ॥

॥ अब कालद्रव्यका स्वरूप कहते है ॥

॥ एगाकोडिसतसट्ठि लक्खासत्तहुत्तरीसहस्साय
दोयसयासोलहिया आवलियाइगमुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥

॥ ( एगाकोडि ) एक क्रोड ( सतसट्ठिलक्खा ) सडसठ लाख ( सत्तहुत्तरीसहस्साय ) सितोतर हजार ( दोयसयासोलहिया ) दोसोस कुछ सोलह अधिक ( आवलिया ) १६७७७२१६ अवलिका ( इग ) एक ( मुहुत्तम्मि ) मुहूर्तके विषे होती हे ॥१२॥

॥ अब अजीव तत्त्वका विशेष स्वरूप देखलाते है ॥

**॥ धम्माऽधम्मापुग्गल नहकालोपचहुतिअजीवा**
**चलणसहावोधम्मो थिरसठाणोअहम्मोय ॥ ९ ॥**

॥ ( **धम्माऽधम्मा** ) धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय ( **पुग्गल** ) पुद्गलास्तिकाय ( **नह** ) आकाशास्तिकाय ( **कालो** ) और काल ( **पच** ) यह पाच ( **हुति** ) है ( **अजीवा** ) अजीव द्रव्य ( **चलणसहावो** ) चलन स्वभाव गुणवाला ( **धम्मो** ) धर्मास्तिकाय है ( **थिर-संठाणो** ) और स्थिरस्वभावगुण वाला ( **अहम्मोय** ) एक अधर्मास्तिकायमें हे ॥ ९ ॥

**॥ अवगाहोआगास पुग्गलजीवाणपुग्गलाचउहा**
**खंधादेसपएसा परमाणुचेवनायव्वा ॥ १० ॥**

॥ ( **अवगाहो** ) अवकाश स्वभावगुणवाला ( **आगास** ) आकाशास्तिकायमें है, वह ( **पुग्गल** ) पुद्गलको ( **जीवाण** ) और जीवको अवकाश देता हे ( **पुग्गला** ) पुद्गलके ( **चउहा** ) चार भेद है ( **खधा** ) खध ( **देस** ) देश ( **पएसा** ) प्रदेश ( **परमाणु** ) और परमणु ऐसे ( **चेव** ) निश्चे ( **नायव्वा** ) जानना ॥ १० ॥

३ ( **पज्जत्ती** ) ऐसे तिन पर्याप्ति ( **आणपाण** ) स्वासोस्वास ४ ( **भास** ) भाषा ५ ( **मणे** ) मनपर्याप्ति ६ ( **चउ** ) आहारादि चार ( **पच** ) मन छोटकर पाँच ( **छप्पिय** ) मन सहित सपूर्ण छे पर्याप्ति ( **एग** ) एक इद्रीको चार ( **विगला** ) विगलेंद्रीको मन छोडकर पाँच ( **असन्नि** ) असनी पचेन्द्रिको मन छोडके पाच ( **सन्नीण** ) संनी पचेन्द्रिको छे है ॥ ६ ॥ अब जो इस अपनी अपनी पर्याप्ति पूरी करके मरे सो जीव पर्याप्ता और बीना पुरी कीए मरे सो जीव अपर्याप्ता कहलाता है ॥

॥ अब जीवोका प्राण कहते है ॥

## ॥ पणिंदियत्तिवलूसा–साउदसपाणचउछसगअठ्ठ
## इगदुतिचउरिंदीण असन्निसन्नीणनवदसय ॥ ७ ॥

॥ ( **पणिदिय** ) पाँच इद्रीयो ( **त्तियल** ) मनादि तीन बल ( **ऊसास** ) स्वासोस्वास ( **आऊ** ) आयु ( **दस** ) ऐसे दस ( **पाण** ) प्राण है ( **चउ** ) स्पर्शेनेंद्रिय कायबल स्वासोस्वास और आयु ऐसे चार ( **छ** ) पूर्वका चारकी साथ रसना और वचन ऐसे छे ( **सग** ) पूर्वका छेकी साथ नासीका ऐसे सात, ( **अठ्ठ** ) आठ प्राण, पूर्वका सातकी साथ चक्षु ( **इग** ) एकेंद्रिको पूर्वका चार ( **दु** ) दो इद्रीको पूर्वका छे ( **ति** ) ते इद्रिको पूर्वका सात ( **चउरिंदीण** )

॥ अब जीवका लक्षण कहते है ॥

**॥ नाणचदसणचेव चरित्तचतवोतहा**
**वीरियउवओगोय एयजीवस्सलरखण ॥ ५ ॥**

॥ ( नाण ) ज्ञान आठ प्रकारे पाँच सम्यक्त्व आसरे और तीन अज्ञान मिथ्यात्व आसरे ( च ) और ( दसण ) दर्शनका चार भेद ( चेव ) निश्चे ( चरित्त ) चारीत्रका पाँच भेद सामायक आदि निश्चय व्यवहार ( च ) फिर ( तवो ) तपके बारह भेद ( तहा ) तैसेही ( वीरिय ) वीर्य दो प्रकारके ( उवओगो ) उपयोगके बारह भेद ( य ) और ( एय ) ये ( जीवस्स ) जीवका ( लरखण ) लक्षण है ॥ ५ ॥

॥ अब जीवोंकी पर्याप्ती कहत है ॥

**॥ आहारसरीरइंदिय पज्जत्तीआणपाणभासमणे**
**चउपचपचछप्पिय इगविगलासन्निसन्नीण ॥ ६ ॥**

॥ ( आहार ) आहारपर्याप्ति १ ( सरीर ) शरीरपर्याप्ति २ ( इंदिय ) इन्द्रियपर्याप्ति

देव मनुष्य तिर्यंच और नारक इसप्रकारसें जीव चार तरहका ( पच ) एकेन्द्रि आदिसे जीव पाँच तरहका ( छव्विहा ) पृथ्वी आदि लेकर छे तरहका ( जीवा ) जीव है ( चेयण ) ज्ञानादि चेतना सहित ( तस ) त्रस हलते चलते सो ( इयरेहि ) इतर स्थिर रहे सो स्थावर ( वेय ) तीन वेद ( गई ) चार गति ( करण ) इद्री पाँच ( काएहि ) काया छ ॥ ३ ॥

॥ अत्र प्रथम जीवका चोदह भेद कहते है ॥

## ॥ एगिंदियसुहुमियरा सन्नियरपणिदियायसवितिचउ अपजत्तापज्जत्ता कमेणचउदसाजियठाणा ॥ ४ ॥

॥ ( एगिंदिय ) एकेन्द्रि जीवाके दो भेद हे ( सुहुमियरा ) एक सूक्ष्म और दुसरा बादर ( सन्नि ) मन सहित ( इयर ) दुसरा असनि मन रहित एसे ( पणिदियाय ) पचेन्द्रिके दो भेद है ( स ) उस पूर्वका चारकी साथ ( वि ) दो इद्रीका एक भेद ( ति ) तेइद्रीका एक भेद ( चउ ) चौरीद्रीका एक भेद यह तिन मिलानेसे सात हुवा ( अपजत्तापज्जत्ता ) वह सात अपर्यासा और दुसरा सात पर्यासा ( कमेणचउदस ) अनुक्रमसे ऐसे सब मिलकर चौदह ( जिय ) जीवोंका ( ठाणा ) स्थान हे ॥ ४ ॥

॥ चउदसचउदसवायालीसा वासीयहुतिवायाला
सत्तावन्नवारस चउनवभेयाकमेणोसिं ॥ २ ॥

॥ (चउदस) जीवका चौदह भेद (चउदस) अजीवका भी चौदह भेद (वायालीसा) पुण्यके बयालीस भेद (वासीय) पापके ब्यासी भेद (हुति) है (वायाला) आश्रवके बयालीस भेद है (सत्तावन्न) संवरके सत्तावन भेद (वारस) निर्जराके बारह भेद (चउ) बंधके चार भेद (नव) और मोक्षतत्त्वका नव (भेया) भेद है (कमेणोसिं) अनुक्रमसे नव तत्त्वका सब मिलकर २७६ भेद है ॥ २ ॥

॥ अब जीवकी छ जाति कहते है ॥

॥ एगविहदुविहतिविहा चउविहापचछविहाजीवा
चेयणतसइयरेहिवेयगई करणकाएहि ॥ ३ ॥

॥ (एगविह) चेतना लक्षणसे सब जीवो एक प्रकारे है (दुविह) त्रस और स्थावरपणसे जीवोंके दो भेदहै (तिविहा) स्त्रीवेद पुरुषवेद और नपुंसकवेदमें जीवोंके तिन भेद है (चउव्विहा)

# ॥ अथ नवतत्त्वप्रकरण प्रारंभ. ॥

॥ जीवाऽजीवापुण्णं पावाऽसवसवरोयनिज्जरणा
बंधोमुक्खोयतहा नवतत्ताहुतिनायव्वा ॥ १ ॥

॥ ( **जीवा** ) जीव, द्रव्य और भावप्राणको धारण करनवाले ( **अजीवा** ) ज्ञान–चेतनासे रहित सो अजीव ( **पुण्ण** ) शुभ फलका जो भोगना वह पुण्य ( **पावा** ) अशुभ फलको जो भोगना वह पाप ( **आसव** ) जो शुभाशुभ कर्मका आना वह आश्रव कहलाते हे ( **सवरो** ) जो शुभाशुभ कर्मको रोकना वह सवर कहलाने है । ( **य** ) और ( **निज्जरणा** ) जो आत्मध्यानसे शुभाशुभ दोनु कर्मको बालके भस्मीभूत करके सर्वथा नही लेकीन देससें उडादेना वह निर्जरातत्त्व ( **बंधो** ) जो शुभाशुभ कर्मका खीरनिरकी तरह आत्मप्रदेशकी साथ बंधहोना वह बंधतत्त्व ( **मुक्खो** ) सर्वथा कर्मोसें जो मुक्त होना सो मोक्षतत्त्व ( **य** ) फिर ( **तहा** ) तेसे ( **नव** ) नव ( **तत्ता** ) तत्त्व याने रहस्य ( **हुति** ) है ( **नायव्वा** ) जानने योग्य ॥ १ ॥

॥ एसोजीवविचारोसखेवरुईण जाणणाहेउ
सखित्तोउद्धरिओ रुद्दाओसुयसमुद्दाओ ॥ ५१ ॥

॥ ( एसो ) इसप्रकारसे ( जीव ) जीवोंका ( वियारो ) विचार ( सखेवरुईण ) संक्षेप रुचीवाले जीवोंको ( जाणणाहेऊ ) जाननेके लिये ( सखित्तो ) संक्षेप मात्र ( उद्धरिओ ) उद्धार किया है ( रुद्दाओसुयसमुद्दाओ ) बहोत विस्तार वाले सूत्ररूप समुद्रसे ॥ ५१ ॥

इति श्रीमन्महायोगीन्द्र आनन्दघन महाराजचरणोपासक अध्यात्मजितमुनि-
विरचित हिन्द्यनुवादसहित जीवविचारप्रकरण समाप्तम्

---

॥ कालेअणाइनिहणे जोणिगहणम्मिभीसणेइत्थ
भमियाभमिहतिचिर जीवा जिणवयणमलहता ॥ ४९ ॥

॥ ( कालेअणाइनिहणे ) अनादि अनन्तकालमें ( जोणिगहणम्मि ) योनियोंसे गहन और ( भीसणेइत्थ ) भयकर इस ससारमे ( भमिया ) भ्रमण करचुके ( भमिहति ) फिर भ्रमण करेगा ( चिर ) बहोत काल तक ( जीवा ) जीवों ( जिणवयणमलहता ) जिनेश्वर महाराजका उपदेशरूपी वचनको नही प्राप्त हुवा ऐसा ॥ ४९ ॥

॥ तासपइसपत्ते मणुअत्तेदुल्लहेविसमत्ते
सिरिसतिसूरिसिट्टे करेहभोउज्जमधम्मे ॥ ५० ॥

॥ ( ता ) इस वास्ते ( संपइसपत्ते ) इस समयपर प्राप्त हुवा ( मणुअत्ते ) मनुष्य भव ( दुल्लहे ) महा दुर्लभ हे ( वि ) इसमे भी दुर्लभ ( समत्ते ) सम्यक्त्व प्राप्त हुवा हे ( सिरि ) ज्ञान रूपी लक्ष्मीका धरणेवाले ( सतिसूरि ) इस जीवविचारका बनानेवाला शातिसुरि महाराज कहते हे ( सिटे ) श्रेष्ठ पुरुषोने कहा हुआ ( करेहभो ) हे भव्य प्राणियो करलो ( उज्जम ) उद्यम ( धम्मे ) धर्मके विषे ॥ ५० ॥

॥ ( चउरोचउरो ) चार चार लाख योनि ( नारयसुराण ) नारीकी और देवाकी हे ( मणुआण ) मनुष्यकी ( चउदसलक्खति ) चौदह लाख योनि है ( सपिंडिआयसव्वे ) ऐसे सब इकट्ठी मिलानसे (चुलसीलरक्खाउजोणीण) सब जीवोंकी योनिकी सख्या चोरासी लाख है ॥ ४७ ॥ इति ससारी जीवोंका वर्णन समाप्त

॥ अब सिद्ध जीवोंके आश्रयी द्वार कहत हे ॥

## ॥ सिद्धाणनत्थीदेहो नआउकम्मनपाणजोणीओ साइअणतातेसि ठिईजिणदागमेभणिया ॥ ४८ ॥

॥ ( सिद्धाणनत्थीदेहो ) सिद्ध जीवोंको शरीर नही हे ( नआउकम्म ) आयु भी नही और कर्म भी नही हे ( नपाणजोणीओ ) प्राण भी नही और योनि भी नही हे ( साइअणतातेसिं ) उसकी सादि अनन्त ( ठिई ) स्थिति ( जिणदागमेभणिया ) जिनेश्वर महाराज क सिद्धातोंमें कही हे ॥ ४८ ॥

॥ अशरीरका उपदेश ॥

॥ ( तह ) तेसेही ( चउरासीलक्खा ) चोरासी लाख ( सखाजोणीणहोइ ) सख्या योनिकी हे ( जीवाण ) जीवोकी ( पुढवाईण ) पृथ्वीकाय आदि ( चउण्ह ) चारकी ( पत्तेय ) प्रत्येक प्रत्येककी ( सत्तसत्तेव ) सात सात लाख है ॥ ४५ ॥

॥ अब वनस्पतिकाय, विकलेंद्री जीवो और पचेन्दी तिर्यचकी योनि कहते हे ॥

॥ दसपत्तेयतरूण चउदसलक्खाहवतिइयरेसु
विगलिदिएसुदोदो चउरोपचिंदितिरियाण ॥ ४६ ॥

॥ ( दस ) दश लाख योनि ( पत्तेयतरूण ) प्रत्येक वनस्पतिकी हे ( चउदसलक्खा-हवति ) चौदह लाख हे ( इयरेसु ) इतर साधारणकी ( विगलिदिएसुदोदो ) विगलेंद्रिकी दोदो लाख कही है ( चउरोपचिंदितिरियाण ) और चार लाख तिर्यच पचेन्द्रियकी हे ॥ ४६ ॥

॥ अब तिर्यचके बिना सब पचेन्दी जीवोकी योनि कहते हे ॥

॥ चउरोचउरोनारय सुराणमणुआणचउदसहवति
सपिडिआयसवे चुलखीलक्खाउजोणीण ॥ ४७ ॥

॥ अब जीवोंके प्राणवियोग रूप मरण कितनी वेर हुए हे सो कहते हे ॥

**॥ एवअणोरपारेससारे सायरम्मिभीमम्मि**
**पत्तोअणतखुत्तो जीवेहिअपत्तधम्मेहि ॥ ४४ ॥**

॥ ( एव ) इस प्रकारसे ( अणोरपारे ) जिसका पार नही है एसा ( ससार ) ससाररूपी ( **सायरम्मि भीमम्मि** ) भयकर समुद्रमें ( **पत्तो** ) मरण प्राप्त हुआ है ( **अणत-खुत्तो** ) अनतिवेर ( **जीवेहि** ) जीवों ( **अपत्तधम्मेहि** ) जिनेश्वर महाराजाके धर्मको नही प्राप्त हुआ ऐसा ॥ ४४ ॥

## योनिद्वार

॥ इसमें प्रथम पृथ्वीकाय आदि चार स्थावरकी योनि कहते है ॥

**॥ तहचउरासीलख्खा सखाजोणीणहोइजीवाण**
**पुढवाईणचउण्ह पत्तेयसत्तसत्तेव ॥ ४५ ॥**

### प्राणद्वार

॥ अब दो गाथासे सब जीवोंका प्राण कहते हे ॥

**॥ दसहाजिआणपाणा इंदिऊसासाउजोगवलरूवा**
**एगिंदिएसुचउरो विगलेसुछसत्तअट्ठेव ॥ ४२ ॥**
**॥ असन्निसन्नीपचिंदिएसु नवदसकमेणवोधवा**
**तेहिंसहविप्पओगो जीवाणभण्णएमरण ॥ ४३ ॥**

॥ ( **दसहा** ) दश प्रकारके ( **जिआण** ) जीवोके ( **पाणा** ) प्राण है ( **इंदि** ) पोंचोइन्द्री ( **ऊसास** ) स्वासोच्छ्वास (**आउ**) आयु (**जोगवल**) मनादि तीन योग वल (**रूवा**) रूप ( **एगिंदिएसु** ) एकेंद्रिको ( **चउरो** ) चार प्राण १ फरशइन्द्री २ कायवल ३ स्वासोच्छ्वास और आयु एसे चार ( **विगलेसु** ) विकलेन्द्रिको ( **छसत्त** ) छ, सात ( **अठेव** ) और आठ अनुक्रमसें जान लेना ॥ ४२ ॥

॥ ( **असन्नि** ) असनी पचेंद्रीयको ( **सन्नीपचिंदिएसु** ) सनीपचेन्द्रि जीवोका प्राण ( **नव** ) नव ( **दस** ) दश ( **कमेण** ) अनुकमसें ( **बोधव्वा** ) जान लेना ( **तेहिंसह** ) उसकी साथसें ( **विप्पओगा** ) जो वियोग होना ( **जीवाण** ) जीवोंका ( **भण्णए** ) कहते है ( **मरण** ) सो मरण ॥ ४३ ॥ इति प्राणद्वार

॥ ( एगिदियाय ) ऐकन्द्रि (अनतकायको छोडकर) ( सव्वे ) और सर्व ( असख ) असख्याती ( उस्सप्पिणी ) उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी कालतक ( सकायमि ) अपनी कायामे ( उववज्झति ) उत्पन्न होते ह ( चयति ) चवन ह ( य ) और ( अणतकाया ) अनतरायके जीवों स्वकायामें ( अणताओ ) अनती वेर ॥ ४० ॥

॥ अब विकलेंद्रि और पचेंद्रि जीवाकी स्वकाय स्थिति कहते हे ॥

## ॥ सखिज्झसमाविगला सत्तठभवापणिदितिरिमणुआ उववज्झतिसकाए नारयदेवायनोचेव ॥ ४१ ॥

॥ ( सखिज्झसमा ) सख्याता वर्ष तक ( विगला ) विकलेंद्रीकी स्वकाय स्थिति है ( सत्तठभवा ) सात आठ भवतक ( पणिदितिरि ) पचेंद्री तिर्यंच ( मणुआ ) और मनुष्य ( उववज्झति ) उपजते हे ( सकाए ) अपनी कायामें ( नारयदेवाय ) नारकी और देवता अपनी काययें ( नो ) न उपजे न चव तसहि नारक चवके देवता न होवे और देवता चवकर नारक न होवे ( चेव ) निश्चय करक इस प्रकारे जीवाकी स्वकाय स्थिति कही ॥ ४१ ॥

( जहन्नेणं ) और जघन्यसें ( अंतमुहुत्तं ) अंतर्मुहूर्तमात्र ( चिय ) निश्चय करके ( जियंति ) जीता है ॥ ३८ ॥

**॥ ओगाहणाउमाणं एवंसखेवओसमक्खाय -**
**जेपुणइत्थविसेसा विसेससुत्ताउतेनेया ॥ ३९ ॥**

॥ ( ओगाहणा ) शरीरकी अवगाहनाका ( आउमाण ) और आयुका प्रमाण (एवं) इस प्रकार ( संखेवओ ) संक्षेपसे ( समक्खाय ) अच्छी तरहसें कहा ( जे ) जो ( पुण ) फिर ( इत्थ ) इसमे ( विसेसा ) विशेष है ( विसेससुत्ताउ ) विशेष सूत्रोंसे ( ते ) उनको ( नेया ) जानना ॥ ३९ ॥

### स्वकायस्थितिद्वार

॥ इसमे प्रथम एकेंद्रिकी स्वकाय स्थिति कहते है ॥

**॥ एगिंदियायसव्वे असंखउस्सप्पिणीसकाय**
**उववज्झतिचयतिय अणतकायाअणताओ ॥ ४० ॥**

॥ अब गर्भज तिर्यंच पचेंद्रिका आयुष्य कहते है ॥

**॥ जलयरउरभुअगाण परमाऊहोइपुव्वकोडीओ**
**पख्खीणपुणभणिओ असखभागोयपलियस्स ॥ ३७ ॥**

॥ ( **जलयर** ) जलचर जीवोंका ( **उर** ) उरपरी सर्पका ( **भुअगाण** ) और भुजपरि सर्पका ( **परमाऊ** ) उत्कृष्ट आयु ( **होइ** ) होते है ( **पुव्वकोडीओ** ) एक पूर्वकोडीवर्षका ( **पख्खीण** ) पक्षियोंका आयुष्य ( **पुण** ) फिर ( **भणिओ** ) कहा हे ( **असख भागोय-पलियस्स** ) पल्योपमके असख्यातमें भागे ॥ २७ ॥ इस प्रकार जीवोकी उत्कृष्टी आयु स्थिति कही

॥ अब सुक्ष्म स्थावर और समुर्च्छिम मनुष्यकी आयु स्थीति कहते हे ॥

**॥ सवेसुहुमासाहारणाय समुच्छिमामणुस्साय**
**उक्कोसजहन्नेण अतमुहुत्तचियजियत्ति ॥ ३८ ॥**



॥ ( **सव्वे** ) सब ( **सुहुमा** ) सुक्ष्म ( **साहारणा** ) और साधारण वनस्पतिकाय ( **य** ) फिर ( **समुच्छिमा** ) समूर्च्छिम ( **मणुस्साय** ) मनुष्य ( **उक्कोस** ) उत्कृष्ट

॥ अब विकलेंद्री जीवोके आयुका प्रणाम कहते है ॥

**॥ वासाणिवारसाऊ विइदियाणतिइदियाणतु**
**अऊणापन्नदिणाइ चउरिंदीणतुछम्मास ॥ ३५ ॥**

( **वासाणिवारसाऊ** ) बारह वर्षका आयु ( **विइदियाण** ) दो इन्द्री जीवाका कहा हे ( **तिइदियाण** ) तेइन्द्री जीवोंका ( **तु** ) फिर ( **अऊणापन्नदिणाइ** ) गुणपचास दिनका है ( **चउरिंदीणं** ) चौरिन्द्री जीवोका आयु ( **तु** ) फिर ( **छम्मास** ) छ मासका आयु उत्कृष्टा कहा है ॥ ३५ ॥

॥ अब पचेंद्रि जीवोका आयुप्रमाण कहते है ॥

**॥ सुरनेरइयाणठिई उक्कोसासागराणितित्तीस**
**चउपयतिरियमणुस्सा तिन्नियपलिओवमाहुति ॥ ३६ ॥**

( **सुर** ) देवता ( **नेरइयाण** ) और नारकको ( **ठिई** ) आयु स्थिति ( **उक्कोसा** ) उत्कृष्टी ( **सागराणितित्तीस** ) तेतीस सागरोपमकी है ( **चउपय** ) चार पैरवाले ( **तिरिय** ) तिर्यंचका ( **मणुस्सा** ) और मनुष्यका उत्कृष्टा आयु ( **तिन्निय** ) तीन ( **पलिओवमा** ) पल्योपमका ( **हुति** ) है ॥ ३६ ॥

आठमा देवलोकका एक दुग इसमें देवोंका शरीर चार हाथका है ( चउ ) एक चतुष्क इसलिये नवमा दशमा ग्यारमा और बारहमा यह चार देवलोकके देवोंका शरीर तीन हाथका है ( गेविज्ज ) नव ग्रैवयक देवोंका शरीर दो हाथका है ( अणुत्तर ) पाच अनुत्तर विमानके देवोंका शरीर एक हाथका है ( इधिक्कपरिहाणी ) एक एक हाथकी हाणी करणा ॥ ३३ ॥

## आयुष्यद्वार

॥ इसम प्रथम एकेंद्रिय जीवोंके आयुका प्रमाण कहते है ॥

**॥ बावीसापुढवीए सत्तयआउस्सतिन्निवाउस्स**
**वाससहस्सादसतरु गणाणतेऊतिरित्ताउ ॥ ३४ ॥**

( **बावीसा** ) बावीश हजार वर्षका ( **पुढवीए** ) पृथ्वीकायके जीवाका आयु है ( **सत्तय** ) सात हजार वर्षका ( **आउस्स** ) अपकायके जीवोंका आयु है ( **तिन्नि** ) तीन हजार वर्षका ( **वाउस्स** ) वाउकायके जीवोंका आयु है ( **वाससहस्सादस** ) दश हजार वर्षका ( **तरु** ) प्रत्येक वनस्पतिका आयु है ( **गणाणतेऊ** ) अग्निकाय जीवोके सहुहरा ( **ति** ) तिन ( **रित्ताउ** ) अहोरात्रीका आयु कहा है ॥ इसप्रकारे बादर एकेन्द्रीका आयुष्य उत्कृष्टा कहा और जघन्यसे अन्तर्मुहूर्तका समज लेना ॥ ३४ ॥

**॥ छच्चेवगाउआइं चउप्पयागभ्भयामुणेयव्वा**
**कोसतिगचमणुस्सा उक्कोससरीरमाणेण ॥ ३२ ॥**

( **छ** ) छ ( **च्चेव** ) निश्चे ( **गाउआइं** ) कोशका ( **चउप्पया** ) चार पैरवाला ( **गभ्भया** ) गर्भजका ( **मुणेयव्वा** )-जानना ( **कोसतिग** ) तीनकोशका ( **च** ) फिर ( **मणुस्सा** ) मनुष्योंका ( **उक्कोस** ) उत्कृष्ट ( **सरीर** ) शरीरका ( **माणेणं** ) प्रमाण जानना ॥ ३२ ॥

॥ अब देवोंका स्वाभाविक शरीरमान कहते है ॥

**॥ इसाणतसुराण रयणीओसत्तहुतिउच्चत्त**
**दुगदुगदुगचउगेविज्जणुत्तरेइक्किक्कपरिहाणी ॥ ३३ ॥**

( **इसाणत** ) भुवनपतिसे लेकर दुसरा इशान देवलोक तक ( **सुराण** ) देवताओंके शरीरका प्रमाण ( **रयणीओ** ) हाथ ( **सत्त** ) सातका ( **हुति** ) है ( **उच्चत** ) उचपणे ( **दुग** ) तीसरा और चोथा देवलोकका एक दुग इसमे देवोका शरीर ७ हाथका हैं ( **दुग** ) पचमा और छठा देवलोकका एक दुग इसमें देवोका शरीर पाच हाथका है ( **दुग** ) सातमा और

( धणुह ) धनुष्य ( पुहुत्त ) दोसे लेकर नव तकका ( पक्खीसु ) पक्षीयोंका शरीर है ( भुअचारी ) भुजपरी सर्पका ( गाउअ ) कोश ( पुहुत्त ) दोसे लेकर नवतक गर्भजका जानना ॥ २० ॥

॥ अब सुमुर्च्छिम् पचेंद्री तिर्यंचका देहमान कहते हे ॥

## ॥ खयराधणुअपुहुत्त भुअगाउरगायजोयणपुहुत्त
## गाउअपुहुत्तमित्ता समुच्छिमाचउपयाभणिया ॥ २१ ॥

( खयरा ) खेचर पक्षीयोंका शरीर ( धणुअपुहुत्त ) दो धनुष्यसें लेकर नव धनुष्य तकका है ( भुअगा ) और भुजपरी सर्पकाभी इतना है (उरगाय) उरपरी सर्पका (जोयण) जोजन ( पुहुत्त ) दोसे लेकर नवतकका है ( गाउअ ) कोश ( पुहुत्तमित्ता) दोसे नवतकका प्रमाण ( समुच्छिमा ) सम्मुर्च्छिम ( चउपया ) चारपैर वाले जीवोंका ( भणिया ) कहा है ( अढाइ द्वीपके वहार ) ॥ २१ ॥

॥ अब गर्भज चतुप्पद तिर्यंच तथा मनुष्यका शरीरमान कहते हे ॥

॥ अब नारक जीवोंके शरीरका प्रमाण कहते है ॥

**॥ धणुसयपचपमाणा नेरइयासत्तमाइपुढवीए**
**तत्तोअध्धध्धूणा नेयारयणप्पहाजाव ॥ २९ ॥**

**( धणु )** धनुष्य ( चार हाथको एक ) **( सयपचपमाण )** पाचसोका प्रमाण **( नेरइया )** नारक जीवोका **( सत्तमाइ )** सातमी **( पुढवीए )** पृथ्वीके **( तत्तो )** उससे **( अद्धघूणा )** आधा आधा कम प्रमाण **( नेया )** जानना **( रयणप्पहाजाव )** यावत् पहिली रत्नप्रभातक ॥ २९ ॥

॥ अब जो तीन प्रकारके गर्भज पचेन्द्रीतिर्यच होत हे उसके शरीरका प्रमाण कहते है ॥

**॥ जोयणसहस्समाणा मच्छाउरगायगभ्भयाहुति**
**धणुअपुहुत्तपक्खीसु भुअचारीगाउअपुहुत्त ॥ ३० ॥**

**( जोयण )** जोजन **( सहस्स )** हजार **( माणा )** प्रमाणका शरीर, **( मच्छा )** मच्छका **( उरगा )** और उरपरी सर्पका **( य )** फिर **( गभ्भया )** गर्भजका **( हुति )** है

## ॥ अगुलअसखभागो सरीरमेगिंदियाणसवेसि
## जोयणसहस्समहिय नवरपत्तेयरुख्खाण ॥ २७ ॥

( **अगुल** ) अगुलका ( [illegible] ) असख्यातमें ( **भागो** ) भागे ( **सरीरमेगिंदियाणसव्वेसि** ) सब एकेंद्री जीवोंका [illegible] ( प्रतक वनस्पतिको छोडकर है ( **जोयणसहस्समहियं** ) हजार जोजनमे कुछ अधिक ( **नवर** ) इतना विशेष ( **पत्तेयरुख्खाण** ) प्रत्येक वनस्पतिका शरीर जानना ॥ २७ ॥

॥ अथ विकलेंद्री जीवोंके शरीरका प्रमाण कहते हे ॥

## ॥ वारसजोयणतिन्नेव गाऊआजोयणचअणुकमसो
## वेइदियतेइदियचउरिंदियदेहमुच्चत ॥ २८ ॥

( **बारसजोयण** ) बारह जोजनका ( **तिन्नेवगाऊआ** ) तिन कोशका (**जोयणच**) एक जोजनका ( **अणुकमसो** ) अनुक्रमसे ( **वेइंदिय** ) दोइद्री जीवोंका ( **तेइंदिय** ) तेइद्रीका ( **चउरिंदिय** ) और चोरिंद्री जीवोका ( **देहमुच्चत्त** ) शरीरका उचपणा जानना ॥ २८ ॥

( सिद्धा ) सिद्धोके ( पनरस ) पन्द्रह ( भेया ) भेद है ( तित्थ ) तीर्थंकर सिद्ध ( अतित्थाइ ) अतीर्थंकर आदि ( सिद्धभेएण ) सिद्धोके भेदोंसें ( एए ) इस प्रकारे ( संखेवेण ) संक्षेपसें ( जीव ) जीवोंका ( विगप्पा ) भेद ( समक्खाया ) अछी तरहसें कह गये ॥ २५ ॥

॥ अब आगे कहना है सो द्वार इस गाथा करके कहत है ॥

॥ एएसिजीवाण सरीरमाऊठिईसकायम्मि
पाणाजोणिपमाण जेसिजअत्थितभणिमो ॥ २६ ॥

( एएसि ) इन पूर्वोक्त ( जीवाण ) जीवोंके ( सरीर ) शरीर कितना ( आऊ ) आयुप्रमाण कितना ( ठिईसकायम्मि ) स्वकायाम रहनकी स्थिति कितनी ( पाणा ) प्राण कितना ( जोणिपमाणं ) योनिका कितना प्रमाण ( जंसि ) जिसके ( ज ) जितना ( अत्थि ) है ( त ) इतना ( भणिमो ) कहुगा ॥ २६ ॥

## शरीरद्वार

॥ इसमें प्रथम एकेंद्रियका शरीर प्रमाण कहत है ॥

**( सव्वे )** सब **( जल )** जलचर **( थल )** स्थलचर **( खयरा )** और खेचर **( समुच्छिमा )** सम्मुर्च्छिम **( गब्भया )** गर्भज **( दुहा )** दो प्रकारके प्रत्येकप्रत्येक **( हुति )** है ॥ अब उत्तरार्धगाथासें मनुष्यके भेद कहते है **( कम्मा )** करमाभूमीके **( अकम्मगभूमी )** अकरमाभूमिके **( अतरदीवा )** अतरद्वीपके **( मणुस्साय )** मनुष्य हे ॥ २३ ॥

॥ अब देवोके भेद कहत हे ॥

**॥ दसहाभवणाहिवई अठविहावाणवतराहुति**

**जोइसियापचविहा दुविहावेमाणियादेवा ॥ २४ ॥**

**( दसहा )** दश प्रकारके **( भवणाहिवई )** भुवनपती है **( अठविहा )** आठ प्रकारके **( वाणवतरा )** व्यत्रीक और वाणव्यत्रीक **( हुति )** है **( जोइसिया )** ज्योतिषी **( पचविहा )** पाच प्रकारके **( दुविहा )** दो प्रकारके **( वेमाणिया )** वैमानीक **( देवा )** देवता हे ॥ इस प्रकारे ससारी जीवोंका सक्षेपसें भेद कहा है ॥ २४ ॥

॥ अब सिद्धाके जीवोंका भेद कहते हे ॥

**॥ सिद्धापनरसभेया तित्थातित्थाइसिद्धभेएण**

**एएसखेवेण जीवविगप्पासमक्खाया ॥ २५ ॥**

॥ ( चउपय ) चार पैरसे चलनवाले ( उरपरिप्पा ) छातीसे और पटसे चलनेवाले
उरपरिसर्प ( भुयपरिसप्पा ) भुजपरिसर्प भुजासे चलनेवाले ( य ) और ( थलयरातिविहा )
थलचरके तीन भेद है ( गो ) गौ ( सप्प ) सांप ( नउल ) नौलिया ( पमुहा ) प्रमुख
( बोधव्वा ) जानना ( ते ) व ( समासेण ) संक्षेपसे कहा ॥ २१ ॥

॥ अब खेचर जीवोंके भेद कहते है ॥

॥ खयरारोमयपक्खी चम्मयपक्खीयपायडाचेव
नरलोगाओवाहि समुग्गपक्खीवियपक्खी ॥ २२ ॥

( खयरा ) खेचर आकाशमे उडनेवाले पक्षीयो ( रोमयपक्खी ) रोमकी पाखवाले
पक्षी ( चम्मयपक्खी ) चर्मकी पाखवाले पक्षी ( पायडा ) प्रगट है ( चेव ) निश्चे ( नरलो-
गाओ ) मनुष्य लोकसें ( बाहि ) बाहेर ( समुग्गपक्खी ) सकोची पाखवाले पक्षी
( वियपक्खी ) खुली पाखवाले पक्षी ॥ २२ ॥

॥ सवेजलथलखयरा समुच्छिमागभ्भयादुहाहुति–
कम्माकम्मगभूमी अतरदीवामणुस्साय ॥ २३ ॥

विहा ) सात प्रकारे ( नायव्वा ) जानना ( पुढवि ) पृथ्वीरत्नप्रभा आदिका (भेएण) भेदोसे ॥ १९ ॥

॥ अब तिर्यच पचेन्द्री और जलचरतिर्यचका भेद कहत है ॥

॥ जलयरथलयरखयरा तिविहापंचिंदियातिरिक्खाय
सुसुमारमच्छकच्छव गहामगराईजलचारी ॥ २० ॥

॥ ( जलयर ) जलचर ( थलयर ) स्थलचर ( खयरा ) खेचर आकाशमे उडनवाले ( तिविहा ) एसे तिन प्रकार ( पचिंदियातिरिक्खाय ) तिर्यच पचेंद्री जीवोका है ( सुसुमार ) शिशुमार ( मच्छ ) माछले ( कच्छव ) काछव ( गहा ) जलजतु ( मगराई ) मगरमच्छ आदि ( जलचारी ) जलचरजीव है ॥ २० ॥

॥ अब स्थलचरजीवोंके भेद कहत है ॥

॥ चउपयउरपरिसप्पा भुयपरिसप्पायथलयरातिविहा
गोसप्पनउलपमुहा बोधव्वातेसमासेण ॥ २१ ॥

॥ अब चउरिंद्रिय जीवोंके भेद कहते है ॥

**॥ चउरिंदियायविच्छु ढिंकुणभमरायभमरियातिड्डा–**
**मच्छियडसामसगा कसारीकविलडोलाइ ॥ १८ ॥**

॥ ( **चउरिंदिया** ) चौरिंद्रीवाले ( **य** ) और ( **विच्छु** ) बिचु ( **ढिंकुण** ) बग ( **भमराय** ) भमरा ( **भमरिया** ) भ्रमरिका ( **तिड्डा** ) तिडी ( **मच्छिय** ) मख्खी ( **डसा** ) डाँस ( **मसगा** ) मच्छर ( **कसारी** ) कसारी ( **कविल** ) करोलिया ( **डोलाई** ) खडमाकडी ॥ १८ ॥

॥ अब पचेन्द्री जीव और नारक पचेन्द्रीका भेद कहते है ॥

**॥ पचिंदियायचउहा नारयतिरियामणुस्सदेवाय**
**नेरइयासत्तविहा नायव्वापुढविभेएण ॥ १९ ॥**

॥ ( **पचिंदिया** ) पचेंद्री जीवों ( **य** ) और ( **चउहा** ) चार प्रकार ( **नारय** ) नारक ( **तिरिया** ) तिर्यंच ( **मणुस्स** ) मनुष्य ( **देवाय** ) देवता ( **नेरइया** ) नारकी ( **सत्त-**

( मेहरि ) काष्टके कीड ( किमि ) कृमिया ( पूयरगा ) पानीक पुर ( बेइंदिय ) दो इन्द्री जीवों ( माइवाहाई ) चूडेल इत्यादि ॥ १५ ॥

॥ अब दो गाथाओंसे ते इन्द्रिय जीवोंके भेद कहेत हे ॥

॥ गोमीमकणजूआ पिपीलिउद्देहियायमक्कोडा
इल्लियघयमिल्लीओ सावयगोकीडजाइआ ॥ १६ ॥
॥ गद्दहयचोरकीडा गोमयकीडायधन्नकीडाय
कुंथुगुवालियइलिया तेइंदियइंदगोवाई ॥ १७ ॥

॥ ( गोमी ) कानखजुरा ( मकण ) खटमल ( जूआ ) जउआ तथा जू ( पिपीलि ) चीटीका ( उद्देहिया ) उद्देहिका (य) और ( मक्कोडा ) माकोडा (इल्लिय) इल्लिका (घयमिल्लीओ ) जो घीमिलो घृतमें पडति है सो ( सावय ) जो चक्षुमें पडति है सो जु ( गोकीड ) गायके कानमे पडति है सो ( जाइआ ) इत्यादि प्रकारकी जातियों औरभी ( गद्दहय ) गधैया ( चोरकीडा ) विष्टाके कीडे ( गोमयकीडा ) गोबरके कीडे ( य ) और ( धन्नकीडा ) धान्यके कीडे ( य ) और ( कुंथु ) कथुआ ( गोवालिय ) गोपालिका ( इलिया ) इलिका ( तेइंदिय ) तेइन्द्री जीवों ( इंदगोवाई ) इन्द्रगोप जो वर्षाकालमे होत है इत्यादि ॥१६-१७॥

॥ अब पृथ्वीकाय आदि जीवोंके विषयमें कुछ विशेष कहते है ॥

**॥ पत्तेयतरुमुत्तपचविपुढवाइणोसयललोए**
**सुहुमाहवतिनियमा अतमुहुत्ताउअद्दिस्सा ॥ १४ ॥**

॥ ( **पत्तेयतरु** ) प्रत्येक वनस्पतिकायको ( **मुत्त** ) छोडकर ( **पचवि** ) पाँचोही ( **पुढवाइणो** ) पृथ्वीकाय आदि लेकर साधारणतक ( **सयललोए** )सब लोकके विषे भरी हुइ है ( **सुहुमा** ) सुक्ष्म ( **हवति** ) हे ( **नियमा** ) निश्चे करके ( **अतमुहुत्ताउ** ) अन्तर्मुहूर्त आयुवाला ( **अद्दिस्सा** ) अदृश्य है ( चरमचक्षुस नही देखा जाव ) ॥ १४ ॥

॥ अब दो इद्रिय जीवोका भेद कहत है ॥

**॥ सखकवड्डुयगडुल जलोयचदणगअलसलहगाई**
**मेहरिकिमिपूयरगावेइदियमाइवाहाई ॥ १५ ॥**

॥ ( **सख** ) शखदक्षीणवर्त आदि ( **कवड्डुय** ) कोडाकोडीयो ( **गडुल** ) गडोला ( **जलोय** ) जोक ( **चदगण** ) चदनक ( **अलस** ) अलशीया ( **लहगाई** ) लालीया जीवो

( अणनकायाण ) अनन्तकाय जीवाके ( तेसि ) उमके ( परिजाणणथ्थ ) अच्छीतरह जाननेके लिये ( लख्खणमेय ) यह लक्षण ( सुए ) सूत्रके विषे ( भणिय ) कहा हे ( गूढ ) गुप्तहो जिमका ( सिर ) पूरुआदि ( सधि ) साधा ( पव्व ) और गाठा ( समभग ) जो तोडनेपर समभाग टुकडा हो जाय ( अहीरगच ) जिमम कोई ततु न हो ( छिन्नरुह ) छेदीने बावनसे भी उगजावे ( साहारण ) साधारणका ( सरीर ) शरीर हे ( तव्विवरीयच ) इससे विपरीत लक्षणवाली ( पत्तेय ) प्रत्येक वनस्पतिकाय हे ॥ ११–१२ ॥

*॥ अब एक गाथासे प्रत्येक वनस्पतिकायके लक्षण तथा भेद कहते हे ॥*

**॥ एगसरीरेएगो जीवोजेसितुतेयपत्तेया**

**फलफूलछल्लिकट्ठा मूलगपत्ताणिवीयाणि ॥ १३ ॥**

॥ ( एगसरीरेएगो ) एक शरीरमें एक ( जीवो ) जीव ( जेसि ) जिसम हो ( तु ) और ( तेय ) उमको ( पत्तेया ) प्रत्येक कहिये ( फल ) फल ( फूल ) फूल ( छल्लि ) छाल ( कट्ठा ) काष्ट ( मूलग ) मूल ( पत्ताणि ) पत्ते ( वीयाणि ) और बीज ऐसे एक वृक्षमें सात ठीकाने जीव होते हे ॥ १३ ॥

पाँच प्रकारकी ( सेवाल ) सेवाल ( भूमिफोडाय ) भूमिफोडा छत्रके आकारे चोमासामें होताहेसो ( अल्लयतिय ) अद्रक, लीली हल्दी और कचुरा यह तीन ( गज्जर ) गाजर ( मोथ्थ ) नागरमोथ ( वथ्थुला ) वथुआ ( थेग ) थेगकी भाजी ( पल्लका )पाल्खो ( कोमल )कोमलहो ( फल ) फल जीसमें बीज न हो ( च ) और ( सिराइ ) जिसका पुक आदि प्रगट दखनेम नही आता है एसे ( सिणाईपत्ताइ ) सनआदिक पत्ते ( थोह्‌रि ) थूहर ( कुआरि ) पागपाठो ( गुग्गुलि ) गुगलाँनी ( गलोय ) गिलोय ( पमुहाइ ) प्रमुग ( छिन्नरूहा ) छेदकर वावनसे भी पीछा उग जावै ॥ ११–१२ ॥

॥ अब दो गाथाओंसे अनन्तकायका विशेष लक्षण दीखलाते हे ॥

॥ इच्चाइणोअणेगे हवतिभेयाअणतकायाण
तेसिपरिजाणणथ्थ लख्खणमेयसुएभणिय ॥ ११ ॥
॥ गूढसिरसंधिपव्वं समभगमहीरुगंचछिन्नरुह
साहारणंसरीर तव्विवरीयचपत्तेय ॥ १२ ॥

॥ ( इच्चाइणो ) इत्यादिक ( अणेगे ) अनेक ( हवति ) हे ( भेया ) भेदो

॥ साहारणपत्तेया वणस्सइजीवादुहासुएभणिया
जेसिमणताणतणु एगासाहारणातेऊ ॥ ८ ॥

॥ ( साहारण ) साधारण ( पत्तेया ) प्रत्येक ( वणस्सइ ) वनस्पतिकायक ( जीवा ) जीवो ( दुहा ) दो प्रकारके ( सुए ) सूत्रके विषे ( भणिया ) कहा है ( जेसिं ) जिसका ( अणताण ) अनन्त जीवोंका ( तणु ) शरीर ( एगा ) एकहो ( साहारणा ) साधारण ( तेऊ ) उसको साधारण कहिये ॥ ८ ॥

॥ अत्र दो गाथाओंसे साधारण वनस्पतिकाय जीवोंके भेद कहते हे ॥

॥ कदाअकुरकिसलय पणगासेवालभूमिफोडाय
अल्लयतियगज्जरमोथ्थवथ्थुला थेगपल्लका ॥ ९ ॥
॥ कोमलफलचसव्व गूढसिराइसिणाइपत्ताइ
थोहरिकुंआरियुग्गुलि गलोयपमुहाइछिन्नरुहा ॥ १० ॥

॥ ( कदा ) सवगमीकन्द ( अकुर ) अकुरा ( किसलय ) नयेकोमलपत्ते ( पणगा )

॥ ( इगाल ) अँगाराकी ( जाल ) ज्वालाकी ( मुम्मुर ) बोभरकी ( उक्का ) उल्का पातकी ( असणि ) वज्रकी अग्नि ( कणग ) आकाशमे उडनेवाले अग्निके कणे ( विज्जु ) बिजलीकी ( आईया ) इत्यादि लेकर ( अगणि ) अग्निकाय ( जियाण ) जिवोंका ( भेया ) भेदो ( नायव्वा ) जानना ( निउणबुद्धीए ) अच्छी बुद्धी करके ॥ ६ ॥

॥ अब एक गाथासे वायुकाय जीवोंके भेद कहते है ॥

## ॥ उब्भामगउक्कलिया मंडलिमहसुद्धगुंजवायाय
## घणतणुवायाईया भेयाखलुवाउकायस्स ॥ ७ ॥

॥ ( उब्भामग ) उद्भ्रामक वायु उंचा चढने वाला ( उक्कलिया ) निचे जमीनसे फर्सता चले सो उत्कलिक ( मंडलि ) विंटोलिया ( मह ) महावायु ( सुद्ध ) शुद्ध मंद वायु ( गुंजवायाय ) गुंजारव करता चलेसो ( घण ) घनवा ( तणु ) तनवा ( वाया ) वायु ( आईया ) इत्यादिक ( भेया ) भेदो ( खलु ) निश्चे ( वाउकायस्स ) वायुकायका है ॥ ७ ॥

॥ अब एक गाथासे वनस्पतिकाय जीवोंके भेद कहते है ॥

तेनतुरी ( ऊस ) क्षार ( मट्टी ) मिट्टीकी ( पाहाण ) पाषाणकी ( जाईओणेगा ) अनेक प्रकारकी जातीओ ( सोवीरजण ) अजन करनेका सुरमा ( लूणाई ) पाच प्रकारके लुण ( पुढवि ) पृथ्वीकायका ( भेयाइ ) भेदो ( इच्चाई ) इत्यादिक है ॥ ३–४ ॥

॥ अब एक गाथासे अप्काय जीवोका भेद कहत हे ॥

॥ भोमतरिक्खमुदग ओसाहिमकरक हरितणूमहिआ
हुतिघणोदहिमाई भेआणेगायआउस्स ॥ ५ ॥

॥ ( भोम ) भूमिका ( अतरिक्ख ) आकाशका ( उदग ) जल ( ओसा ) ओसका ( हिम ) बफका ( करग ) गडाका ( हरितणू ) हरि वनस्पती पर रहाहुवा ( महिया ) धुअरका ( हुति ) है ( घणोदहिमाई ) घनोदधिआदि ( भेआ ) भेदो ( अणेगाय ) अनेक प्रकारके ( आऊस्स ) अप्कायका ॥ ५ ॥

॥ अब एक गाथासे अग्निकाय जिवोका भेदो कहत हे ॥

॥ इंगालजालमुम्मुर उक्कासणिकणगविज्जुमाईया
अगणिजियाणभेयानायवानिउणवुद्धीए ॥ ६ ॥

॥ (जीवा) जीव (मुत्ता) एक मुक्तिका (संसारिणो) दूसरा संसारी (य) फिर (तस) त्रसजीव (थावरा) स्थावर जीव (य) और (संसारी) संसारीके दो भेद हैं (पुढवि) पृथ्वीकाय (जल) अपूकाय (जलण) तेउकाय (वाऊ) वाउकाय (वणस्सई) वनस्पतिकाय (थावरा) स्थावरके पाँच भेद (नेया) जानना ॥ २ ॥

॥ अब दो गाथाओंसे पृथ्वीकायके भेद कहते हैं ॥

॥ फलिहमणिरयणविद्दुम हिंगुलहरियालमणसिलरसिंदा
कणगाइधाउसेढी वन्नियअरणेट्टयपलेवा ॥ ३ ॥

॥ अब्भयतूरीऊस मट्टीपाहाणजाइओणेगा
सोवीरंजणलूणाई पुढविभेयाइइच्चाइ ॥ ४ ॥

॥ (फलिह) स्फाटिकरत्न (मणि) चन्द्रकान्तादि मणीरत्न (रयण) रत्न (विद्दुम) मूंगीया (हिंगुल) हिंगलू (हरियाल) हरताल (मणसिल) मैनसिल (रसिंदा) पारो (कणगाई) कनकादि सातों (धाउ) धातु (सेढी) खड़ी (वन्निय) लालरंगकी मट्टी (अरणेट्टय) अरणेट्टय नामे पाषाण (पलेवा) परेवा नाम पाषाण (अब्भय) अभरख (तूरी)

॥ ८ ॥

॥ ॐ आनन्दघनगुरुभ्योनमः ॥

# ॥ जीवविचारप्रकरणंमूलहिन्द्यनुवादसहितम् ॥

॥ भुवणपईवंवीरं नमिऊणभणामि अबुहबोहत्थं
जीवसरूव किंचिवि जहभणियपूवसूरिहि ॥ १ ॥

॥ ( भुवण ) तिन भुवनमें ( पईंच ) दीपक समान ( वीर ) वीरप्रभुको ( नमिऊण ) नमस्कार करके ( भणामि ) कहता हु ( अबुहबोहत्थ ) अज्ञजीवोंको बोध होनेके लिये ( जीव ) जीवका ( सरूव ) स्वरूप ( किंचिवि ) किंचित्मात्र ( जह ) जैसे ( भणिय ) कहा है ( पूवसूरिहिं ) पूर्वक आचार्योंने ॥ १ ॥

॥ जीवामुत्तासंसारिणोय तसथावरायसंसारी
पुढविजलजलणवाऊ वणस्सईथावरानेया ॥

# ॥ श्रीलघुप्रकरणमाला हिन्द्यनुवादसहिता ॥

हिन्द्यनुवादक

अध्यात्म जीतमुनि

छपाके प्रसिद्ध करनवाले शेठ वाडीलाल पानाचद–पट्टणनिवासी

तर्फसे

भेट

श्रीअभयजैन ग्रन्थ[illegible]
नाहटा कोटड़ी
बीकानेर,

वीर सवत् २४४१ विक्रम सवत् १९७५ सन १९१८

बडोदा—शियापुरा–लुहाणामित्र स्टीम प्रिंटिंग प्रेसमें ठक्कर विठ्ठलभाइ आशारामने प्रसिद्ध कर्ताके लिये
छापकर प्रसिद्ध किया ता १–१–१९१९